सत्यमेव जयते

G20 भारत 2023 INDIA

74वीं गणतंत्र दिवस परेड
74th Republic Day Parade

26 जनवरी 2023 (6 माघ, 1944)

26 January 2023 (6 Magha, 1944)

अमर जवान

सत्यमेव जयते

74वीं गणतंत्र दिवस परेड
74th Republic Day Parade

26 जनवरी 2023 (6 माघ, 1944)

26 January 2023 (6 Magha, 1944)

INDIA

मिस्र का सैन्य दस्ता

पहली बार मिस्र की सशस्त्र सेना 26 जनवरी, 2023 को भारत की गणतंत्र दिवस परेड में भाग ले रही हैं।

मिस्र की सशस्त्र सेनाओं के 144 सदस्यीय गौरवशाली दस्ते में मिस्र की सेना की मुख्य शाखाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले सैनिक शामिल हैं जो मिस्र के पुरातन इतिहास में इसके प्रभुत्व और गौरव का प्रदर्शन करते हैं। इसका नेतृत्व कर्नल महमूद मोहम्मद अब्देल फतह अल खरासवी कर रहे हैं।

मिस्र की सशस्त्र सेना का यह दस्ता मानवता को ज्ञात सर्वाधिक प्राचीन नियमित सेनाओं में से एक की विरासत को आगे बढ़ा रहा है। इसका इतिहास 3200 ईसा पूर्व का है जब सम्राट नारमर ने मिस्र का एकीकरण किया था। पुराने साम्राज्य को मिस्र की सभ्यता का चरम शिखर माना जाता था।

आधुनिक मिस्र की सेना का गठन मुहम्मद अली पाशा (1805–1849) के शासन के दौरान किया गया था जिन्हें आधुनिक मिस्र का संस्थापक माना जाता है। उन्होंने मिस्र की एक सेना का गठन किया था जिसमें मुख्य रूप से मिस्र के सैनिक थे। 19वीं और 20वीं सदी के कई अभियानों और युद्धों में मिस्र की सशस्त्र सेना का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

मिस्र के सशस्त्र बल भारत की गणतंत्र दिवस परेड में प्रतिभागिता को सम्मान और गौरव का प्रतीक मानते हैं।

EGYPT'S MARCHING CONTINGENT

For the first time, the Egyptian Armed Forces are participating in the Republic Day Parade of India on 26 January 2023.

The Egyptian Armed Forces' 144-member proud contingent comprises soldiers from the main branches of the Egyptian military, reflects the prominence of Egypt and its pride in its ancient history. The marching contingent is led by Colonel Mahmoud Mohamed Abdelfattah Elkharasawy.

The Egyptian contingent today carries the legacy of the one of the oldest regular armies known to humanity. Its history goes back to 3200 BC when King Narmer unified Egypt. The Old Kingdom was considered to be the height of the Egyptian civilization.

The modern Egyptian army was established during the rule of Muhammad Ali Pasha (1805-1849), who is widely considered as the founder of modern Egypt. He formed an army with soldiers mainly conscripted from Egypt. The Egyptian Armed forces were significantly involved in many expeditions & wars between the 19th and 20th centuries.

The Egyptian armed forces consider it as an honour and privilege to participate in India's Republic Day Parade.

कार्यक्रम

1027 बजे	राष्ट्रपति एवं मुख्य अतिथि, मिस्र अरब गणराज्य के राष्ट्रपति का राजकीय सम्मान के साथ आगमन।
	प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति एवं मुख्य अतिथि की अगवानी।
	प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति एवं मुख्य अतिथि से रक्षा मंत्री, रक्षा राज्य मंत्री, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ, तीनों सेनाध्यक्षों तथा रक्षा सचिव का परिचय।
	राष्ट्रपति, मुख्य अतिथि तथा प्रधान मंत्री का मंच की ओर प्रस्थान।
	राष्ट्र–ध्वज फहराया जाता है तथा राष्ट्रपति के अंगरक्षक राष्ट्रीय सलामी देते हैं। बैंड द्वारा राष्ट्रगान की प्रस्तुति तथा 21 तोपों की सलामी।
	गणतंत्र दिवस परेड आरंभ होती है।
	सांस्कृतिक झाँकी।
	मोटर साइकिल करतब
	विमानों द्वारा सलामी।
	राष्ट्रीय सलामी।
	राष्ट्रपति एवं मुख्य अतिथि का राजकीय सम्मान के साथ प्रस्थान।

PROGRAMME

1027 hrs	The President and the Chief Guest, the President of Arab Republic of Egypt arrive in State.
	The Prime Minister receives the President and the Chief Guest.
	The Prime Minister presents to the President and the Chief Guest, Raksha Mantri, Raksha Rajya Mantri, Chief of Defence Staff, the three Service Chiefs and Defence Secretary.
	The President, the Chief Guest and the Prime Minister proceed to the rostrum.
	The National Flag is unfurled and the President's Body Guard presents the National Salute. The Band plays the National Anthem and a 21-Gun Salute is fired.
	The Republic Day Parade commences.
	The Cultural Pageant.
	Motor Cycle Display
	Flypast.
	National Salute.
	The President and the Chief Guest depart in State.

परेड क्रम

हेलीकॉप्टरों द्वारा पुष्प वर्षा

परेड कमांडर

परेड उप–कमांडर

परमवीर चक्र तथा अशोक चक्र पुरस्कार विजेता

मिस्र (देश के मुख्य अतिथि) का मार्चिंग और बैंड दस्ता

सेना

सवार दस्ता

61 घुड़सवार दस्ता

मैकेनाइज्ड दस्ते

मुख्य युद्धक टैंक अर्जुन

नाग मिसाइल प्रणाली (एनएएमआईएस) ट्रैक एवं बोएवाया मशीना पेखोटी (बीएमपी) 2/2के

त्वरित कार्रवाई लड़ाकू वाहन (क्यूआरएफवी)

के–9 वज्र ट्रैक्ड सेल्फ प्रोपेल्ड होवित्जर गन

ब्रह्मोस मिसाइल

10 मी0 का कम लंबाई वाला ब्रिज

मोबाइल एएससीओएन नोड

आकाश (नई पीढ़ी के उपस्कर)

उन्नत हल्का हेलीकाप्टर (एएलएच)

उन्नत हल्का हेलीकाप्टर, शस्त्र प्रणाली एकीकृत

मार्च करती हुई सैन्य टुकड़ियां

मैकेनाइज्ड इंफैन्ट्री रेजिमेन्ट

कवचित केन्द्र : बैंड ध्वनि 'शेर–ए–जवान'
पैरा रेजिमेंट केन्द्र
राजपूताना राइफल्स रेजिमेन्ट केन्द्र

पंजाब रेजिमेन्ट केन्द्र

मराठा लाइट रेजिमेन्ट केन्द्र

राजपूत रेजिमेन्ट केन्द्र : बैंड ध्वनि 'अप्पू'
सिख रेजिमेन्ट केन्द्र
सिख लाइट इंफैन्ट्री रेजिमेन्ट केन्द्र

डोगरा रेजिमेन्ट केन्द्र

बिहार रेजिमेन्ट केन्द्र

THE ORDER OF MARCH

Showering of flower petals by Helicopters

Parade Commander

Parade Second-in-Command

Param Vir Chakra and Ashok Chakra Awardees

Marching and Band Contingent from Egypt (Country of Chief Guest)

ARMY

Mounted Column

61 Cavalry

Mechanized Columns

Main Battle Tank Arjun

Nag Missile System (NAMIS) Track & Boyevaya Mashina Pekhoty (BMP) 2/2K

Quick Reaction Fighting Vehicle (QRFV)

K-9 Vajra tracked Self Propelled howitzer Gun

Brahmos Missile

10 m Short Span Bridge

Mobile ASCON Node

AKASH (New Generation Equipment)

Advanced Light Helicopter (ALH)

Advanced Light Helicopter, Weapons System Integrated

MARCHING CONTINGENTS

Mechanised Infantry Regiment

Armoured Centre : Band playing 'Sher-e-Jawan'
PARA Regiment Centre
Rajputana Rifles Regiment Centre

Punjab Regiment Centre

Maratha Light Regiment Centre

Rajput Regiment Centre : Band playing 'Appu'
Sikh Regiment Centre
Sikh LI Regimental Centre

Dogra Regiment Centre

Bihar Regiment Centre

असम रेजिमेन्ट केन्द्र : बैंड ध्वनि
महार रेजिमेन्ट केन्द्र 'वीर कारगिल'
जेएके राइफल्स रेजिमेन्ट केन्द्र

गोरखा रेजिमेन्ट

भूतपूर्व सैनिकों की झाँकी

नौसेना

नौसेना ब्रास बैंड

नौसेना की मार्च करती हुई टुकड़ी

झाँकी

वायु सेना

वायु सेना बैंड

वायु सेना की मार्च करती हुई टुकड़ी

दो बुलेट प्रूफ सुरक्षा वाहन के साथ झाँकी

नोटः उक्त दस्तों के संचलन के दौरान 03 मिग 29 द्वारा फ्लाई पास्ट

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन

"प्रभावी निगरानी, संचार एवं खतरों के निष्प्रभावन द्वारा राष्ट्र की सुरक्षा" संबंधी थीम पर झाँकी

70 टन के ट्रेलर पर व्हील्ड आर्मर्ड प्लेटफार्म

सीएपीएफ और अन्य सहायक फोर्स

असम राइफल्स की मार्च करती हुई टुकड़ी
बैंड : असम राइफल्स

भारतीय तटरक्षक की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड : के.रि.पु.ब.
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड : रेलवे सुरक्षा बल
रेलवे सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड : दिल्ली पुलिस
दिल्ली पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी

सीमा सुरक्षा बल के ऊंटों की टुकड़ी
बैंड : सीमा सुरक्षा बल के ऊंट

Assam Regiment Centre : Band playing
Mahar Regiment Centre 'Veer Kargil'
JAK Rif Regiment Centre

Gorkha Regiment

Veteran Tableau

NAVY

Navy Brass Band

Navy Marching Contingent

Tableau

AIR FORCE

Air Force Band

Air Force Marching Contingent

Tableau along with two bullet proof security vehicle

Note: Fly past by 03 x Mig 29 aircrafts during the movement of the above contigents

DEFENCE RESEARCH AND DEVELOPMENT ORGANISATION

Tableau on the theme "Securing Nation with Effective Surveillance, Communication and Neutralising threats"

Wheeled Armoured Plateform on 70 tons Trailer

CAPFs AND OTHER AUXILIARY FORCES

Assam Rifles Marching Contingent
Band : Assam Rifles

Indian Coast Guard Marching Contingent

Band : CRPF
CRPF Marching Contingent

Band : RPF
RPF Marching Contingent

Band : Delhi Police
Delhi Police Marching Contingent

BSF Camel Contingent
Band : BSF Camel

राष्ट्रीय कैडिट कोर

बॉय मार्चिंग टुकड़ी

एनसीसी बैंड

गर्ल मार्चिंग टुकड़ी

राष्ट्रीय सेवा योजना

राष्ट्रीय सेवा योजना मार्चिंग टुकड़ी
मास पाइप एंड ड्रम बैंड

खुली जीप में प्रधान मंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार विजेता

सांस्कृतिक प्रस्तुति

झाँकी – 23 (तेईस)

सांस्कृतिक कार्यक्रम

"वंदे भारतम" प्रतियोगिता के जरिए चयनित कलाकारों के समूह द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां ।

मोटर साइकिल करतब : सेना

विमानों द्वारा सलामी

(मौसम अनुकूल रहने पर)

प्रचंड आकृति : इस आकृति में एक एलसीएच विमान दो अपाचे हेलीकाप्टरों और दो एएलएच एमके–4 विमानों के साथ echelon में आगे बढ़ते हुए पांच विमानों की साथ 'वाणाग्र' आकृति में उड़ान भर रहे हैं।

तिरंगा आकृति : प्रचंड आकृति के बाद पांच सारंग (एएलएच) तिरंगे को फहराते हुए "सीढ़ी" की आकृति में उड़ान में भर रहे हैं।

टंगैल आकृति : इस आकृति में आगे एक डकोटा विमान दो डोर्नियर विमानों के साथ echelon में 'विक' आकृति में उड़ान भर रहे हैं।

वज्रांग आकृति : इस आकृति में 01 x सी–130 विमान 04 राफेल विमानों के साथ पंक्तिबद्ध आकृति में उड़ान भर रहे हैं।

गरुड़ आकृति : इस आकृति में आई एल–38 एवं एएन 32 विमान 'विक' आकृति में उड़ान भर रहे हैं।

नेत्र आकृति : इस आकृति में 01x एईडब्ल्यू एंड सी विमान के साथ 04 x राफेल विमान echelon में 'वाणाग्र' की आकृति में उड़ान भर रहे हैं।

NATIONAL CADET CORPS

Boys Marching Contingent

NCC's Band

Girls Marching Contingent

NATIONAL SERVICE SCHEME

National Service Scheme Marching Contingent
Mass Pipes & Drums Band

Pradhan Mantri Rashtriya Bal Puraskar Vijeta in open Gypsies

THE CULTURAL PAGEANT

Tableaux - 23 (Twenty Three)

CULTURAL PERFORMANCES

Cultural Performances by group of artists selected through "Vande Bharatam" competition

Motor Cycle Display : Army

FLY-PAST by IAF

[If weather conditions permit]

Prachand Formation : The formation comprising one LCH ac in lead with two Apache Helicopters and two ALH Mk-IV ac in echelon would fly in five ac "Arrow" Formation.

Tiranga Formation : Five Sarang (ALH) would fly in 'Ladder' formation streaming Tricolour after Prachand Formation.

Tangail Formation : The formation comprising one Dakota ac in lead with two Dornier ac in echelon would fly in 'Vic' Formation.

Vajraang Formation : The formation comprising of 01 x C-130 with 04 x Rafale ac would fly in 'Abreast' Formation.

Garuda Formation : The formation comprising of IL- 38 SD and AN 32 aircraft would fly in 'Vic' Formation.

Netra Formation : The formation would comprise 01 x AEW&C ac with 04 x Rafale ac in echelon would fly in 'Arrow' Formation.

भीम आकृति : इस आकृति में 01 x सी–17, 02 x एसयू–30 विमानों के साथ echelon में धुआं छोड़ते हुए और 'विक' आकृति बनाते हुए सलामी दे रहे हैं।

अमृत आकृति : 06 x जगुआर विमानों से निर्मित यह आकृति 'वाणाग्र' आकृति बनाते हुए कर्तव्य पथ के उत्तर में वाटर चैनल के ऊपर सलामी दे रही है।

त्रिशूल आकृति : 03 x सुखाई 30 एम के आई विमान 900 कि.मी. प्रति घंटा की गति के साथ त्रिशूल आकृति के लिए ऊपर उठ रहे हैं।

विजय आकृति : कर्तव्य पथ के उत्तर मेँ वाटर चैनेल के ऊपर 900 कि.मी. प्रति घण्टा की गति से एक राफेल विमान उड़ान भर रहा है। मंच की ओर बढ़ते हुए यह विमान "वर्टीकल चार्ली" के लिए ऊपर उठते हुए और कई घुमाव लेते हुए करतब दिखा रहा है।

गुब्बारों को छोड़ा जाना: भारतीय मौसम विभाग

Bheem Formation : The formation would comprise 01 x C-17 with 02 x Su-30 ac in echelon streaming fuel and would fly past in 'Vic' Formation.

Amrit Formation : The formation comprising 06 x Jaguar ac would flypast over the water channel North of Kartavya Path in 'Arrow-head' Formation.

Trishul Formation : Three Su-30 MKI aircrafts at 900 kmph would pull up outwards for Trishul manoeuvre.

Vijay Formation : One Rafale ac would be flying in at 900 kmph over water channel North of Kartavya Path. Approaching the dais, the aircraft would pull up for 'Vertical Charlie' and carry out several turns.

Release of balloons: India Meteorological Department

सांस्कृतिक प्रस्तुति

आज भारत अपना 74वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। यह सांस्कृतिक प्रस्तुति हमारी प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक विविधता और प्रगति की झलक प्रस्तुत करती है जो भारत के गौरवशाली अतीत की प्रतीक है तथा समृद्ध और खुशहाल भविष्य के प्रति देशवासियों की आकाक्षांओं को प्रतिबिंबित करती है।

रगं बिरंगी झाँकियों का वर्ण–विन्यास भारत के सामाजिक, सास्कृतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकी पहलुओं का चित्रण करता है। इन झाँकियों में हमारे भौगोलिक सौंदर्य तथा वास्तु–शिल्पीय धरोहर को दिखाया गया है।

CULTURAL PAGEANT

Today, India is celebrating its 74th Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of our ancient civilisation, cultural diversity and progress symbolising India's glorious past and reflects the citizens' aspirations for a prosperous and happy tomorrow.

The array of colourful tableaux depicts the social, cultural, economic and technological facets of India. These tableaux capture the beauty of our landscape and architectural heritage.

13

प्रभाला तीर्थम – मकर संक्रांति के दौरान किसानों का त्यौहार

आंध्र प्रदेश की झाँकी "प्रभाला तीर्थम"– मकर संक्रांति के दौरान किसानों का त्यौहार विषय पर है, जो डॉ बीआर अंबेडकर कोनासीमा जिले में धार्मिक रूप से मनाए जाने वाले किसानों के पारंपरिक त्यौहार के उत्सव की एक अनकही कहानी है।

आंध्र प्रदेश के लोग संस्कृति और विरासत से समृद्ध हैं और किसान सदियों पुरानी संस्कृति और परंपराओं से बंधे हुए हैं। 450 साल पुरानी परंपरा "प्रभाला तीर्थम" और किसानों की संस्कृति को संरक्षित किया जाता है और आंध्र प्रदेश में मुख्य त्यौहार संक्रांति पर धार्मिक रूप से पालन किया जाता है जो फसल के मौसम के बाद बड़े पैमाने पर मनाया जाता है। प्रभालू का अर्थ है भगवान शिव और पार्वती के उत्सव विघम जिन्हें रंगीन कपड़ों, रंगीन कागजों, मोर के पंखों, कथिरकुला, नारियल के पेड़ के पत्तों, गन्ने और केले के पेड़ों से सजाए गए बांस के तख्ते के बीच में सजाया और रखा जाता है एवं संक्रांति पर्व के दौरान एक जुलूस में ले जाया जाता है।

झाँकी का अगला भाग पारंपरिक रूप से सजाई गई बैलगाड़ी के साथ उत्सव में शामिल होने वाले पारंपरिक किसान परिवार का प्रतिनिधित्व करता है जो धान के खेत के किनारे सड़क से गुजर रहा है। पीछे के हिस्से में झाँकी के दोनों ओर संगीतकारों के साथ वटुलू (कहार) द्वारा ले जाते हुए पालकी उत्सव को एक कस्बे से गुजरता हुआ दर्शाया गया है। पालकी के पीछे, पारंपरिक रूप से सजे–धजे कलाकार विशाल रंग–बिरंगी प्रभा के सामने गराग नृथ्यम नृत्य कर रहे हैं और झाँकी के दोनों ओर एक किसान परिवार को आशीर्वाद दे रहे हैं। पूरे निचले हिस्से को असली धान से सजाया गया है जैसे कि पवित्र मूर्तियाँ धान के खेतों से गुजर रही हों।

– आंध्र प्रदेश

PRABHALA TEERTHAM – A FESTIVAL OF PEASANTRY DURING MAKARA SANKRANTHI

The tableau of Andhra Pradesh is on the subject "Prabhala Teertham"–A Festival of Peasantry during Makara Sankranthi, an untold story of celebration of traditional festival of peasantry religiously followed in Dr BR Ambedkar Konaseema District.

The people of Andhra Pradesh are rich in culture and heritage and the peasantry is bound with age old culture and traditions. "Prabhala Theertham", a 450-year old tradition and the culture of peasantry is protected and religiously followed in Andhra Pradesh on main festival Sankranthi which celebrates after harvest season in big way. Prabhalu means the Utsava Vigahams of Lord Shiva and Parvathi which are decorated and placed in the middle of bamboo frames decorated with colourful clothes, colour papers, peacock feathers, Kathirkula, coconut tree leaves, Sugar cane and Banana trees and are taken in a procession during Sankranti festival.

The front part of the tableau represents the traditional farmer's family attending the celebration with traditionally decorated bullock cart which is passing on paddy field side road. The rear portion depicts the festival Palki carried by the "Vatulu" through a town accompanying musicians either sides. Behind the palki, traditionally dressed artists are dancing Garag nruthyam in front of huge colourful Prabha and on either sides of tableau and persists are blessing a farmer's Family. The entire bottom portion is decorated with real paddy as if the holy figurines are passing through paddy fields.

- ANDHRA PRADESH

असम :
वीरों और अध्यात्म की भूमि

गणतंत्र दिवस–2023 पर प्रस्तुत "असम : वीरों और अध्यात्म की भूमि" विषयक असम की झाँकी में दो भाग शामिल हैं – नाव पर लचित बरफुकन और गुवाहाटी, असम में माँ कामाख्या मंदिर का संरचनात्मक दृश्य।

लचित बरफुकन (1622–1672) असम के लिए वही हैं जो महाराज छत्रपति शिवाजी महाराष्ट्र के लिए और महाराणा प्रताप सिंह राजस्थान के लिए हैं– अदम्य साहस और वीरता, बलिदान और देशभक्ति के एक अविश्वसनीय अवतार, वे असम के इतिहास में सबसे महान सेनापति थे। अहोम राजा, चक्रध्वज सिंह ने गुवाहाटी पर कब्जा करने वाले मुगलों के खिलाफ अहोम सेना का नेतृत्व करने के लिए लचित बरफुकन को चुना। सरायघाट की लड़ाई में, उनके नेतृत्व में, असमिया सेना ने मुगलों के खिलाफ एक निर्णायक जीत दर्ज की।

कामाख्या मंदिर सैकड़ों वर्षों से असम के इतिहास का गवाह रहा है जिसमें असम को जीतने के लिए दुश्मन के कई प्रयास प्रमुख हैं। झाँकी के अग्रभाग में लचित बरफुकन को नाव पर दर्शाया गया है। झाँकी के पश्च भाग में मां कामाख्या मंदिर की प्रतिकृति है जिसे गुवाहाटी में ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर नीलांचल पहाड़ियों पर स्थित 'आनंद का मंदिर' भी कहा जाता है, जो कि तांत्रिक उपासकों के लिए सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में से एक है। शिवसागर जिले के शिव डोल एवं रंग घर की प्रतिकृति को सशक्त अहोम्स के शाही निर्माण के रूप में दर्शाया गया है।

बिहू नृत्य असम के बिहू त्यौहार से संबंधित एक स्वदेशी लोक नृत्य है और असमिया संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। ढोल, पेपा, बही, ताल, गोगोना, बिहू गीतों और नृत्यों में प्रयुक्त होने वाले वाद्य यंत्र हैं।

– असम

ASSAM : LAND OF HEROES AND SPIRITUALISM

The theme of the tableau of Assam presented on Republic Day-2023 is "Assam : Land of Heroes and Spiritualism", comprises of two parts—Lachit Borphukan on boat and structural view of Maa Kamakhya Temple, Guwahati, Assam.

Lachit Borphukan (1622-1672) is to Assam what Shivaji is to Maharastra and Maharana Pratap Singh to Rajasthan-an incredible embodiment of indomitable courage and valor, sacrifice and patriotism, he was the greatest General in Assam's history. Ahom King Chakradhwaj Singha chose Lachit Borphukan to lead the Ahom army against Mughals, who held Guwahati. In the battle of Saraighat under Lachit's command, the Assamese army registered a decisive victory against the Mughals.

The Kamakhya temple has been a witness to the history of Assam for hundreds of years wherein several attempts of enemy to conquer Assam are predominant. In the front of the tableau, Lachit Borphukan is dedicted on boat. In the rear portion, trailer the structure of Kamakhya temple also known as the "Temple of Bliss" located on Nilachal hills on the bank of the River Brahmaputra in Guwahati, Assam, one of the most important pilgrimage destinations for Tantric worshippers. The replica of Shiva Dol and Rong Ghar of Sibsagar district has been shown as the Royal construction of the mighty Ahoms.

The Bihu dance is an indigenous folk dance of Assam related to the Bihu festival and is important part of Assamese Culture. Dhol , Pepa, Bahi, Taal, Gogona are the musical instruments in Bihu Songs and dance.

- ASSAM

15

लद्दाख का पर्यटन और समग्र संस्कृति

लद्दाख की झाँकी का विषय "लद्दाख का पर्यटन और समग्र संस्कृति" उनकी संस्कृति पर आधारित है। संस्कृति और परंपराओं की विविधता लद्दाख की पहचान है।

स्वभाव से शांत और शांतिपूर्ण, लद्दाख के लोगों को अपनी समृद्ध संस्कृति पर गर्व है। लद्दाख की समग्र संस्कृति एवं अनूठा सौंदर्य उसकी पवित्र परंपराओं के अथाह भंडार के माध्यम से प्रकट होता है। ग्रेटर हिमालय और कराकोरम रेंज की गोद में बसा लद्दाख साहस प्रेमियों के लिए भी स्वर्ग है, और उन लोगों के लिए भी स्वर्ग है जो मौन की ध्वनि को महसूस करना चाहते हैं।

झाँकी के अग्रभाग में मठवासी मुखौटा नृत्य (छम्स) को दर्शाया गया है, इसके बाद लद्दाख की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत के साथ–साथ खुबानी की खेती, सी बकथॉर्न ग्रोथ, पश्मीना, ग्रामीण पर्यटन आदि जैसे क्षेत्रों में विकास दिखाया गया है। मध्य और जमीनी भाग विभिन्न जनजातियों जैसे बलती, पुर्गी, लद्दाखी, चांगपा, शीना, ब्रोकपा (आर्यन) आदि के लोगों को लद्दाख की समग्र संस्कृति का जश्न मनाते हुए दर्शाया गया है। पृष्ठ भाग मुलबेक और कारसे–खर, कारगिल की गांधार कला–आधारित रॉक–कट बुद्ध (मैत्रेय) की मूर्तियों को दर्शाता है। यह भाग, संकू के पास स्थित एक धार्मिक स्थल कारपो–खार तीर्थ को भी दर्शाता है, जो मुस्लिम संत और विद्वान सैयद मीर हाशिम को समर्पित है, वे थी–नामग्याल को इस्लाम सिखाने के लिए कश्मीर से आए थे, जो 16 वीं शताब्दी में इस्लाम में परिवर्तित हो गए थे।

विविध संस्कृति, परंपराओं, पहनावे और बोलियों के साथ लद्दाख का आश्चर्यजनक परिदृश्य, प्रकृति के साथ सद्भाव में रहने की मानव क्षमता के संश्लेषण को दर्शाता है। यह अद्वितीय विशिष्टता लद्दाख को आगंतुकों के लिए मानव सहनशक्ति के लोकाचार का पता लगाने और अनुभव करने के लिए एक शानदार जगह बनाती है। इस तरह लद्दाख की झाँकी प्रकृति के साथ लद्दाख के सौहार्दपूर्ण संबंधों के सार को प्रदर्शित करती है।

– लद्दाख

TOURISM & COMPOSITE CULTURE OF LADAKH

The theme of the tableau of Ladakh "Toursim & Composite Culture of Ladakh " is based on their culture. The diversity of culture and traditions is the hall mark of Ladakh.

Peaceful & calm, the people of Ladakh are proud of their diverse culture. Ladakh's composite culture & stunning landscape manifest through its repository of sacred traditions. Ladakh nestled in the Himalayas and Karakoram Range is paradise for adventure lovers and heaven for the sound of silence appreciators.

The front of the tableau depicts the Monastic Mask Dance (Chhams) followed by development in sectors like Apricot Farming, Sea buckthorn Growth, Pashmina, Rural Tourism etc. along with the Cultural and Spiritual Heritage of Ladakh. The middle and ground part depict people from different tribes like Balti, Purgi, Ladakhi, Changpa, Sheena, Brokpa (Aryan) etc. celebrating Ladakh's composite culture. The rear part depicts the Gandhara art-based rock-cut Buddha (Maitreya) statues of Mulbek and Kartse-khar, Kargil. This part also showcases Karpo-Khar Shrine, a religious site situated near Sankoo dedicated to Sayed Mir Hashim, a Muslim saint and scholar believed to have come from Kashmir to teach Islam to Thi-Namgyal, who converted to Islam in the 16th century.

The stunning landscape of Ladakh coupled with its diverse culture, traditions, attire and dialects reflect a synthesis of human capacity to live in harmony with nature. This unique distinction makes Ladakh a great place for visitors to explore and experience the ethos of human endurance. The tableau of Ladakh therefore, exhibits the essence of Ladakh's harmonious relationship with nature.

- LADAKH

मानसखंड

गणतंत्र दिवस–2023 पर उत्तराखण्ड द्वारा प्रस्तुत झाँकी का शीर्षक "मानसखंड" है। उत्तराखण्ड को देवभूमि के रूप में भी जाना जाता है, जहाँ कण–कण में देवत्व बसता है। एक ओर जहाँ पवित्र चारधाम तथा जीवनदायिनी गंगा–यमुना बहती हैं, वहीं दूसरी ओर मानसखंड (कुमांऊ) के अधीन विभिन्न मन्दिरों के समूह हैं।

झाँकी के अग्र भाग में पर्यटन के क्षेत्र में विश्वविख्यात कार्बेट नेशनल पार्क में विचरण करते हुए बारहसिंगा, हिरन व विभिन्न पक्षियों को दिखाया गया है। झाँकी के मध्य भाग में उत्तराखण्ड राज्य का राज्य पशु 'कस्तूरी मृग' तथा राष्ट्रीय पक्षी 'मोर' तथा 'घोरल' को दिखाया गया है। झाँकी के पृष्ठ भाग में मानसखंड के अल्मोड़ा जनपद में प्राचीन 125 छोटे–बड़े मंदिरों के समूह जागेश्वर धाम को दर्शाया गया है। झाँकी में सबसे पीछे देवदार के वृक्षों को दिखाया गया है। साथ ही झाँकी के बाहरी भाग में उत्तराखण्ड की प्रसिद्ध "ऐपण कला" को प्रदर्शित किया गया है। झाँकी के साथ उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध छोलिया नृत्य का दल नृत्य करते हुए दर्शाया गया है।

– उत्तराखण्ड

MANSKHAND

The theme of the tableau presented by Uttarakhand on Republic Day-2023 is "Manskhand". Uttarakhand is also known as Devbhoomi where divinity resides in every particle. On one side where holy Chardham and life-giving Ganga-Yamuna flows, on the other side there are different group of temples under Manaskhand (Kumaon).

In the front portion of the tableau, reindeer, deer and various birds have been shown roaming in the world-famous Corbett National Park in the field of tourism. In the central portion of the tableau, the state animal of Uttarakhand State, 'Musk Deer' and national bird 'Peacock' and 'Ghoral' have been shown. Jageshwar Dham, a group of ancient 125 small and big temples in Manaskhand's Almora district is shown in rear portion part of the tableau. Deodar trees are shown at the end of the tableau. The famous "Aipan Art" of Uttarakhand has been displayed in the outer part of the tableau. Along with the tableau, the dance group of famous Choliya dance of Uttarakhand has been shown performing.

- UTTARAKHAND

त्रिपुरा में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से पर्यटन और जैविक खेती के माध्यम से स्थायी आजीविका

त्रिपुरा की झाँकी का शीर्षक है "त्रिपुरा में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से पर्यटन और जैविक खेती के माध्यम से स्थायी आजीविका"। त्रिपुरा में पर्यटकों के आकर्षण के लिए समृद्ध विविधता है जिसमें पुरातात्विक स्मारक, जलाशय, धार्मिक महत्व रखने वाले मंदिर, मस्जिद, बौद्ध–स्तूप, वन्य–जीवन एवं समृद्ध सांस्कृतिक विविधता सम्मिलित है। सुंदर प्रकृति परिदृश्य, वन्य जीव और वनस्पति, संस्कृति, त्यौहारों व लोककथाएं, नृत्य और कला रूप से सम्पन्न इस राज्य में ईको पर्यटन के विकास की अपार संभावनाएं हैं। साथ ही त्रिपुरा की जलवायु अनानास, संतरा, कटहल, लीची, काजू, नींबू, चाय आदि जैसी बागवानी फसलों के जैविक उत्पादन के लिए उपयुक्त हैं।

झाँकी के आगे वाले भाग में सुंदर महामुनि पैगोडा (बौद्ध स्तूप) को दर्शाया गया है। मध्य भाग में त्रिपुरा के विभिन्न जनजाति नृत्य जैसे होजागिरी, ममिता आदि को दर्शाया गया है। साथ ही कार्यरत स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) से जुड़ी महिलाएं, अनानास की टोकरियाँ लिए हुए महिलाएं, कुटीर, चाय बागान और उस के कर्मी भी दर्शाए गए हैं। हस्तशिल्प और बांस से इस के साइड पैनल सजाए गए हैं। त्रिपुरा की मिश्र संस्कृति और विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी को रंग–बिरंगे पारंपरिक परिधानों में सजी महिलाओं के माध्यम से समान संख्या में झाँकी के दोनों ओर दर्शाया गया है।

– त्रिपुरा

SUSTAINABLE LIVELIHOOD THROUGH TOURISM AND ORGANIC FARMING IN TRIPURA WITH ACTIVE PARTICIPATION OF WOMEN

The theme of tableau of Tripura is "Sustainable Livelihood Through Tourism and Organic Farming in Tripura with Active Participation of Women". Tripura has a rich variety for tourist attractions consisting of archaeological monuments, water bodies, temples, mosques and Buddhist stupas of religious significance, wildlife and rich cultural diversity. It has immense potential for development of eco tourism as the state is endowed with beautiful nature, landscapes, flora & fauna, culture, festivals and folktales, dance and art forms. On the other hand climatic condition of Tripura is suitable for organic production of large variety of horticulture crops like pineapple, oranges, Jackfruit, coconut, leaches, cashew nut and lemon, tea etc.

In the tableau the beautiful Mahamuni Pagoda (Buddhist stupa) is depicted at the front. The middle part showcases various indigenous performing art forms of Tripura viz. - Hojagiri, Mamita etc, SHG (Self Help Group) women at work, women with baskets of pineapples, Cottage, tea plantation and workers with the side and base adorned with beautiful handicrafts and bamboo panels. The composite culture of Tripura and participation of women in different fields is depicted through women dressed in colourful traditional costumes walking in equal numbers on both side of the tableau.

- TRIPURA

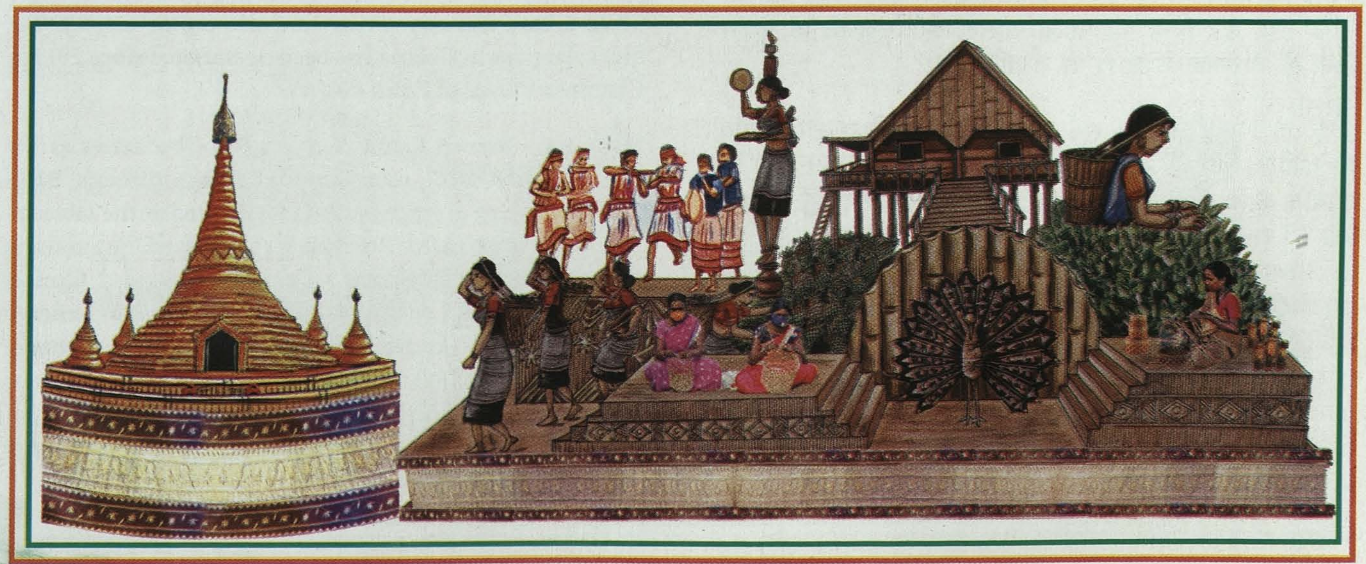

18

क्लीन – ग्रीन ऊर्जा युक्त गुजरात

गणतंत्र दिवस–2023 पर गुजरात द्वारा प्रदर्शित झाँकी का शीर्षक "क्लीन–ग्रीन ऊर्जा युक्त गुजरात" है। अग्रसर और अग्रणी गुजरात अपने सतत् नवाचार एवं विकास से नई दिशाओं की ओर बढ़ रहा है। एक बार पुनः गुजरात ने सस्ती, पुनः– प्राप्य एवं हरित ऊर्जा के सतत् विकास लक्ष्यों (SDG) को प्राप्त करने के लिए स्वयं को सक्षम बनाया है। विश्व में ऊर्जा एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता में आज गुजरात अग्रणी है।

झाँकी के अग्रभाग में कच्छ के खावड़ा में निर्मित हो रहे विश्व के सबसे बड़े हाईब्रिड (सौर और पवन) ऊर्जा पार्क की प्रस्तुति को कच्छ के परंपरागत वस्त्रों में खड़ी महिला को एक हाथ में सौर ऊर्जा के प्रतीकरूप में सूर्य और दूसरे हाथ में पवन ऊर्जा के प्रतीकरूप में चकरी लिए हुए दिखाया गया है। साथ ही कच्छ के स्थानीय पुरातन घर भुंगा, लिपाई और सफेद रण को भी प्रदर्शित किया गया है। राज्य का पहला सोलर पार्क गुजरात के पाटन जिले के चारणका में 2011 से संचालित है।

झाँकी के पिछले भाग में सूर्य मंदिर के लिये प्रसिद्ध मोढेरा गाँव को दर्शाया गया है जो बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली (BESS) के उपयोग के कारण देश का पहला 24X7 सौर ऊर्जा संचालित गांव बना है। साथ ही, PM KUSUM (प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान) योजना ने किसानों को सोलर रूफटॉप एनर्जी सिंचाई, केनाल रूफटॉप एनर्जी उत्पादन एवं पवन–सौर ऊर्जा एवं स्वच्छ–हरित ऊर्जा उत्पादन उपलब्ध कराया है। इस प्रकार नवीकरणीय ऊर्जा क्रांति इस झाँकी की मुख्य प्रस्तुति है। पवन चक्कियों और सौर पैनलों के साथ कच्छ के सफेद रण के ऊँट और गुजरात की सांस्कृतिक विरासत रास–गरबा को भी यहां प्रदर्शित किया गया है।

– गुजरात

CLEAN - GREEN ENERGY EFFICIENT GUJARAT

Gujarat presents its tableau on Republic Day-2023 on the theme "Clean-Green Energy Efficient Gujarat". A trailblazer and vanguard, Gujarat propounds new directions with its persistence for innovation and evolution. Once again, Gujarat has outdone itself by capitalizing on renewable energy resources like solar and wind to achieve the Sustainable Development Goals (SDG) of Affordable, Renewable, and Green Energy. Today, Gujarat leads the world in self-reliance in the energy sector and environment conservation.

An amalgam of modernity and ethnicity, the tableau's forefront shows a girl in Kutchi attire with a sphere of the sun and a wind turbine in both her hands, showcasing the world's largest hybrid (solar and wind) renewable energy park taking shape at Khavda in Kutch. Its famous Bhunga, white desert, and clay artistry are also on the display. The first solar park in Gujarat has been operational since 2011 at Charanka village of Patan district.

Modhera – known for its Sun Temple – bedazzles as the country's first 24x7 solar-powered village through BESS (Battery Energy Storage System) is depicted at the tableau's rear side. PM KUSUM (Pradhan Mantri Kisan Urja Suraksha evam Utthan Mahabhiyan) scheme has provided farmers with solar rooftop energy irrigation, canal rooftop energy production, and wind-solar energy and clean-green energy production. The Renewable energy revolution, thus, forms the core theme of the tableau. Camels in the White Rann of Kutch and Ras-Garba, a cultural heritage of Gujarat, have also been featured alongwith wind-mill and solar panels.

- GUJARAT

बाबा बैद्यनाथ धाम

गणतंत्र दिवस–2023 पर झारखण्ड अपनी झाँकी "बाबा बैद्यनाथ धाम" पर प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत झाँकी में देवघर स्थित वैद्यनाथ धाम को दर्शाया गया है। यहाँ स्थापित शिवलिंग द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। श्रावण माह में लाखों श्रद्धालु विश्वभर से जलाभिषेक करने आते हैं। देवघर में विमान सेवा भी शुरू हो चुकी है।

मान्यता है कि लंका में शिवलिंग स्थापना के उद्देश्य से रावण ने शिव की हिमालय पर आराधना की थी। प्रसन्न होकर भगवान शिव ने रावण को शिवलिंग सीधे लंका ले जाने की अनुमति दी। रावण शिवलिंग को लेकर लंका चल पड़ा। रास्ते में उसे लघुशंका महसूस हुई। शिवलिंग एक व्यक्ति को थमा कर रावण लघुशंका करने चला गया। शिवलिंग थामे व्यक्ति को शिवलिंग भारी लगने पर उसने उसे जमीन पर रख दिया और शिवलिंग वहीं स्थापित हो गया।

झाँकी के अग्रभाग में भगवान बिरसा मुण्डा को दर्शाया गया है। झारखण्ड के खूँटी जिले के उलिहातु में जन्मे बिरसा मुण्डा समाज सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ उलगुलान (क्रांति) किया और परिणामस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर फाँसी दी गई, आदिवासी समाज आज भी उन्हें धरती आबा (God) के रूप में जानता हैं। साइड पैनल पर झारखण्ड की आदिवासी कला सोहराई पेंटिंग है, जो हजारीबाग की पहाड़ियों की गुफाओं में आज भी मौजूद है। झाँकी के साथ पाईका नृत्य कर रहे कलाकार कर्तव्य पथ की शोभा बढ़ा रहे हैं।

– झारखण्ड

BABA BAIDYANTH DHAM

Jharkhand presents its tableau on Rebublic Day-2023 on the theme "Baba Baidynath Dham". The tableau depicts the famous Baidyanath Temple located in Deoghar. The Shivling established here is one of the twelve Jyotirlingas. Lakhs of devotees come from all over the world to perform Jalabhishek in the month of Shravan. Air service has also started in Deoghar.

It is believed that Ravana worshiped Shiva on the Himalayas for the purpose of establishing Shivling in Lanka. Pleased Lord Shiva allowed Ravana to take the Shivling directly to Lanka. Ravana moved towards Lanka with the Shivling. On the way, he felt nature's call. After handing over the Shivling to a person, he went to relief himself. When the person holding the Shivling found it heavy, he placed it on the ground and the Shivling got established.

Lord Birsa Munda is depicted in front of the tableau. Born in Ulihatu of Khunti District, Jharkhand, Birsa Munda was a social reformer and freedom fighter. He revolted against the British and as a result he was arrested and hanged, even today the tribal society considers him as the God of the Earth. The Sohrai painting of tribal art of Jharkhand is depicted on the side panels, which is still present in the caves of the hills of Hazaribagh. Artists performing Paika dance alongside the tableau are adding to the glory of the spectacular Kartavya Path.

- JHARKHAND

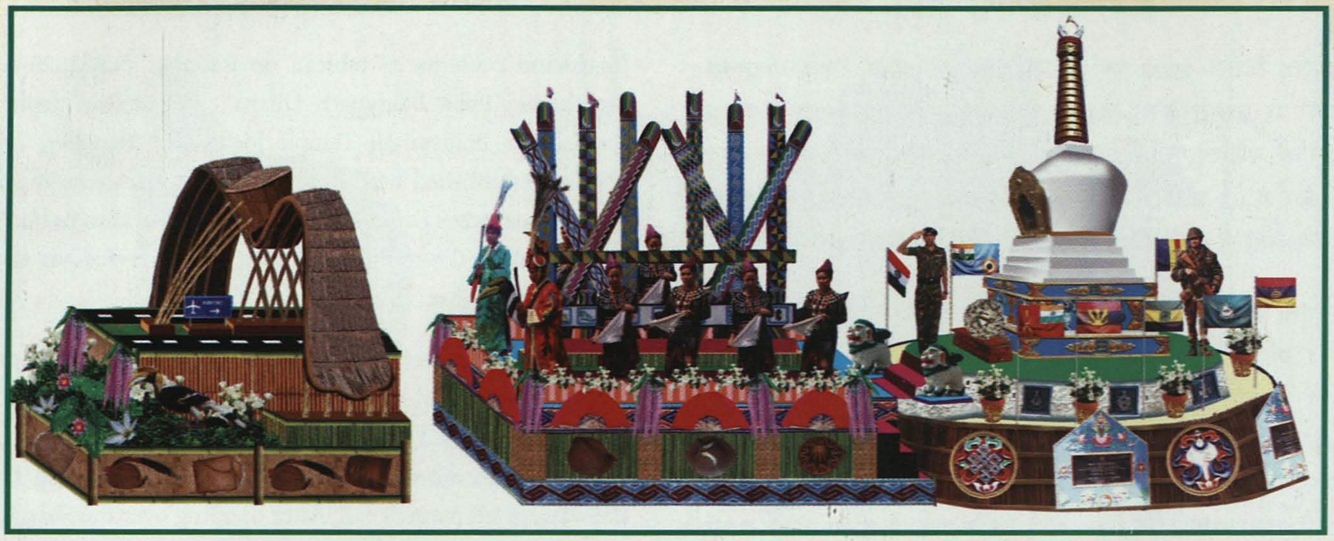

अरुणाचल प्रदेश में पर्यटन की संभावनाएं

अरुणाचल प्रदेश की झाँकी Ideas@75 पर आधारित है। पर्यटन क्षेत्र में बढ़ती गतिविधियों से प्रभावित होने के कारण इस झाँकी का शीर्षक "अरुणाचल प्रदेश में पर्यटन की संभावनाएं" रखा गया है।

अरुणाचल प्रदेश विभिन्न संस्कृति वाली कई जन जातियों के साथ ऐसा विविधता वाला राज्य है जिसके पास सांस्कृतिक, साहसिक क्रियाकलाप खेल पारिस्थितिकी, धार्मिक, ऐतिहासिक और पुरातत्व पर्यटन के क्षेत्र में पर्यटन के लिए काफी संभावनाएं हैं। प्राकृतिक सुंदरता से परिपूर्ण होने के कारण और सड़क, रेल और हवाई संपर्क जैसी सुदृढ़ अवसंरचनाओं के निर्माण से सिविल टर्मिनलों के पास उन्नत लैंडिंग ग्राउंड्स के उन्नयन से और राजधानी इटानगर में डोन्यी पोलो एयरपोर्ट की शुरुआत से अरुणाचल प्रदेश में घरेलू पर्यटकों के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए भी पहुँचना आसान हुआ है।

पूर्ण रूप से प्रभावी ई–ऑफिस और सुदूर क्षेत्रों में इंटरनेट की उपलब्धता ने पर्यटकों को घर बैठे आसानी से अपेक्षित सूचना प्राप्त करने की सुविधा प्रदान की है।

झाँकी के अग्रभाग में डोन्यी पोलो एयरपोर्ट का प्रवेश द्वार एवं राज्य पक्षी–हॉर्नबिल को विभिन्न रंगों के फूल वाले पौधों की सजावट वाले हरे–भरे दृश्य के बीच दर्शाया गया है। झाँकी के मध्य भाग में शापवंग यांग मानो पॉई, एक नृत्य उत्सव को प्रदर्शित किया गया है। 1962 का युद्ध स्मारक झाँकी के अंतिम भाग में दर्शाया गया है। पारंपरिक परिधानों को पहने राज्य की मुख्य जनजातियां झाँकी के साथ–साथ दिखाई दे रही हैं। पर्यटन, अरुणाचल प्रदेश के लोगों के लिए अधिकतम लाभकारी है।

– अरुणाचल प्रदेश

PROSPECTS OF TOURISM ARUNACHAL PRADESH

The tableau of Arunachal Pradesh is based on the theme Ideas@75. Being inspired by the rising activity in Tourism sector, the tableau is titled "Prospects of Tourism in Arunachal Pradesh".

Arunachal Pradesh, being a diverse state with many ethnic tribes having different cultures, has a rich potential for Tourism in the fields of Culture, Adventure, Sports, Ecology, Religious, History and Archaeology Tourism. Blessed with natural beauty and building of robust infrastructures like Road, Rail and Air connectivity, the up-gradation of Advance Landing Grounds (ALGs) with civil terminals and the recent introduction of Donyi Polo Airport in the Capital city of Itanagar has enhanced easy access for the International as well as the domestic Tourists in Arunachal Pradesh.

Fully functional E-Office and availability of internet in the remotest areas, facilitates easy access for the Tourists in acquiring required information from the luxury of their home.

In the front portion of the tableau, the Donyi Polo Airport entrance gate and the state Bird–Hornbill, amidst lush green landscape adorned by orchids are depicted. Shapawng Yawng Manou Poi - a dance festival has been shown in the middle protion of the tableau. In the rear portion, 1962 War Memorial has been depicted. Major Tribes of the State, attired in traditional dresses, are accompanying besides the Tableau. Tourism immensely benefits the people of Arunachal Pradesh.

-ARUNACHAL PRADESH

नया जम्मू–कश्मीर

गणतंत्र दिवस–2023 पर जम्मू–कश्मीर की झाँकी में जम्मू–कश्मीर के तीर्थयात्रियों और मनोरंजक पर्यटन क्षमता की पृष्ठभूमि में "नया जम्मू–कश्मीर" को प्रदर्शित किया जा रहा है।

जम्मू व कश्मीर के पहाड़ी क्षेत्रों में विविध जीव पाए जाते हैं, जिनमें लुप्तप्राय कश्मीरी बारहसिंगा, जिसे कश्मीरी भाषा में हंगुल कहा जाता है, सामान्य तेंदुआ और नए घोषित यूटी पक्षी खलीज तीतर भी शामिल हैं। जम्मू–कश्मीर विश्व प्रसिद्ध ट्यूलिप गार्डन और वायलेट क्रांति (लैवेंडर कल्टीवेशन) के लिए भी जाना जाता है, जिसने संघशासित प्रदेश में नवोदित उद्यमियों के लिए नए रास्ते खोल दिए हैं। इसके अलावा, जम्मू–कश्मीर में पर्यटन ने स्वतंत्र भारत के 75 वर्षों के इतिहास में पहली बार 1.62 करोड़ पर्यटकों की आमद दर्ज करके हाल के वर्षों में रिकॉर्ड ऊँचाइयाँ हासिल की हैं।

झाँकी के अग्र भाग में जंगली परिदृश्य में तेंदुए, कश्मीरी बारहसिंगे और खलीज तीतर के प्रतिरूपों को प्रदर्शित किया गया है। झाँकी के पृष्ठ भाग में ट्यूलिप बाग और लैवेंडर की खेती तथा एक लैवेंडर फार्म पर काम कर रही महिलाओं को दिखाया गया है। झाँकी के मध्य भाग में मिट्टी के घरों को प्रदर्शित किया गया है, जिन्हें पर्यटकों के पर्यावरण के अनुकूल प्रवास के लिए प्रचारित किया जाता है। झाँकी के अंतिम भाग में प्रसिद्ध पवित्र अमरनाथ तीर्थ स्थल को दर्शाया गया है। झाँकी के पश्चभाग में विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल गुलमर्ग में स्कीइंग को भी दर्शाया गया है।

– जम्मू और कश्मीर

NAYA JAMMU & KASHMIR

The tableau of Jammu and Kashmir on Republic Day-2023 is showcasing "Naya Jammu & Kashmir" in the backdrop of pilgrim and recreational tourism potential of J&K.

The hilly regions of J&K have varied fauna and is a home to the once endangered Kashmiri Stag, the UT animal locally called Hangul in Kashmiri Language, the common leopard and the newly declared UT Bird Kalij Pheasant. The J&K is also known for the world famous tulip gardens and for violet revolution (Lavender Cultivation) which has opened new vistas for budding entrepreneurs in the UT. Furthermore, tourism in J&K has achieved great heights during the recent year by registering a record tourist footfall of 1.62 crore for the first time in the history of 75 years of independent India.

The front portion of the tableau is showcasing sculptures of a Leopard, Kashmiri Stags, and Kalij pheasant in the wild setting. The rear portion of the tableau is showcasing tulip gardens and lavender cultivation and women working on a lavender farm. In the centre part of the tableau, the mud houses, which are being promoted to offer eco-friendly living for tourists, is displayed. At the rear end of the tableau famous holy Amarnath shrine is depicted. On the rear portion of the tableau the skiing in the world famous tourist destination Gulmarg is also depicted.

- JAMMU & KASHMIR

नारी शक्ति : केरल

केरल नारी शक्ति और महिला सशक्तिकरण की लोक परंपराओं की झाँकी प्रस्तुत करता है, जिसमें कलरिप्पयट्ट की युद्ध कला शामिल है। इस कला का इतिहास दो हज़ार साल पुराना है। इस झाँकी में तालवाद्य और आदिवासी परम्पराओं को भी समाहित किया गया है।

पूरे भारत में सबसे अधिक महिला साक्षरता दर केरल में पाई जाती है। दुनिया का सबसे बड़ा महिला स्वयं सहायता नेटवर्क, कुदुम्बश्री, केरल में ही मौजूद है। यह झाँकी महिला सशक्तिकरण को साक्षरता मिशन से जोड़ती है।

झाँकी का अग्रभाग 2020 में नारी शक्ति पुरस्कार की विजेता कार्तियानी अम्मा को प्रदर्शित करता है, जिन्होंने 96 साल की उम्र में साक्षरता परीक्षा में शीर्ष स्थान हासिल किया। पश्च भाग में सबसे आगे सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायन के लिए 2022 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली आदिवासी महिला नंचियाम्मा देश को सलाम करती नजर आ रही हैं। इसके पीछे, महिलाएं कलरिप्पयट्ट का प्रदर्शन कर रही हैं। केरल की लोककथाओं में कलरिप्पयट्ट में विशेषज्ञता के लिए जानी जाने वाली महान महिला उन्नी अर्चा को शीर्ष पर प्रदर्शित किया गया है। इरूला समुदाय का जनजातीय नृत्य किनारों पर दर्शाया गया है और कुदुम्बश्री गतिविधियों को झाँकी के पिछले हिस्से में प्रदर्शित किया गया है।

झाँकी के अग्र और पृष्ठ भाग को बेपुरे उरु के मॉडल में प्रस्तुत किया गया है, जो स्थानीय रूप से तैयार लकड़ी का जहाज है, जो वर्तमान दौर को मसाले के व्यापार के लिए मशहूर प्राचीन परंपरा से जोड़ता है। उरु की तकनीक और शिल्प कौशल ईसा पूर्व के काल से पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से स्थानांतरित किए जाते हैं और इसे खाड़ी देशों में निर्यात किया जा रहा है। कतर में आयोजित फीफा वर्ल्ड कप में उरू के लघु रूप को उपहार के रूप में चुना गया था। शिंगारी मेलम का प्रदर्शन करने वाली महिला तलवादकों को जमीनी तत्वों के रूप में देखा जाता है।

— केरल

NAREE SHAKTI : KERALA

Kerala presents the tableau of Naree Shakti and Folk Traditions of Women Empowerment that includes Kalarappayat, a martial art with more than 2000-year history, percussion and tribal traditions.

Kerala has the highest women's literacy rate in the country and has the world's largest women's self help network, Kudumbashree. The tableau connects women empowerment with literacy mission.

The front of the tableau shows Karthyayani Amma, the winner of Nari Shakti Puraskar in 2020 who top scored the literacy examination at the age of 96. At front of the rear portion, Nanchiyamma, the first tribal woman to achieve the national film award in 2022 for best playback singing is seen saluting the nation. Behind this, Women are performing kalarappayat. The legendary woman Unni Archa who is known for expertise in kalarappayat in Kerala's folklore is portrayed at the top. Tribal dance from the Irula community is shown on the sides and Kudumbashree activities are showcased at the back portion of the tableau.

The front and back of the tableau are presented in the model of Beypure Uru, a locally crafted wooden ship which connects present to the ancient tradition of spice trade. Uru's technology and craftsmanship are orally transferred over generations from BC and it is being exported to Gulf countries. Miniature of Uru was selected as a gift item in the FIFA World Cup held in Qatar. Women percussionists performing Shingari Melam are seen as ground elements.

- KERALA

कोलकाता में दुर्गा पूजा : UNESCO द्वारा मान्यता प्राप्त मानवता की एक अमूर्त सांस्कृतिक विरासत

पश्चिम बंगाल की झाँकी में दुर्गा पूजा में देवी माँ की पूजा पर प्रकाश डाला गया है जो सभी वर्ग, पंथ और धर्म की सीमाओं से परे जनसाधरण के सभी वर्गों में सामाजिक सामंजस्य और बंधन के लिए एक वास्तविक शक्ति बनी हुई है। UNESCO ने कोलकाता में दुर्गा पूजा को मानवता की एक अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दी है और यह झाँकी उत्सव मनाने और अद्वितीय विशिष्टता को सामने लाने का प्रयास है।

झाँकी के अग्र भाग में "मंगल घट" या "मंगलकलश" का प्रतिरूप है, जिसके ऊपर हरा नारियल है जो देवी माँ की पूजा की शुरुआत का प्रतिनिधित्व करता है। पृष्ठ भाग में फर्श पर पारंपरिक बंगाली 'अल्पना' ("Alpana"), जो कि बंगाल की विशिष्ट भू चित्रकला है के साथ बंगाल की टेराकोटा शैली के अद्वितीय वास्तु शिल्प चित्र वाले स्तंभों, मेहराबों से निर्मित 'ठाकुर दालान' ("Thakur Dalan") की एक छवि को दर्शाया गया है।

पश्च् भाग में मुख्य प्रदर्शनी में पारंपरिक 'शोला' ("Shola") या 'डाकेर साज़' ("Daker Saaj")में देवी माँ की मूर्ति है, जो दुर्गा पूजा से जुड़ी एक विशिष्ट बंगाली शिल्प शैली है। ढाकियों एवं अन्य जीवित तत्वों जैसे पुजारियों, उपासकों आदि को प्रतिमा को घेरे हुए प्रदर्शित किया गया है।

झाँकी में पश्चिम बंगाल की महिला 'ढाकियों' ("Dhakis") को प्रत्येक दिशा में दर्शाया गया है जो आगे बढ़ रही हैं और पारंपरिक बंगाली परिधान पहने हुए 'ढाक' ("Dhak") बजा रही हैं।

– पश्चिम बंगाल

DURGA PUJA IN KOLKATA : RECOGNISED AS INTANGIBLE CULTURAL HERITAGE OF HUMANITY" BY UNESCO

The West Bengal tableau highlights Durga Puja, the worship of the Mother Goddess which remains a veritable force for social cohesion and bonding across all segment of populace – transcending the boundaries of class, creed and religion. The UNESCO has recognized Durga Puja in Kolkata as an intangible cultural Heritage of humanity, and this tableau is an endevour to celebrate and bring forth the unique distinction so accorded.

The tableau is fronted with the model of "Mangal Ghat" or "Mangal Kalash" with the green coconut atop representing the beginning of the worship of the Mother Goddess. The rear section depicts an image of "Thakur Dalan" built of the pillars and arches having unique Bengal Terracotta styled architectural design along with the traditional Bengali "Alpana" on the floor – the exclusive designer floor painting craft of Bengal.

On the rear portion, the principal exhibit is the idol of the Mother Goddess in traditional "Shola" or "Daker Saaj" – a typical Bengali craft style associated to Durga Puja. Figurines of ubiquitous Dhakis and other live elements such as "Pujaris", worshiper and others surround the idol.

The tableau is flanked in each side by the women dhakis from West Bengal, who are moving on and playing "Dhaks" wearing conventional Bengali attire.

- WEST BENGAL

साढ़े तीन शक्तिपीठ और नारी शक्ति

आजादी का अमृत महोत्सव की पृष्ठभूमि में महाराष्ट्र इस वर्ष नारी शक्ति विषय के अंतर्गत "साढ़े तीन शक्तिपीठ और नारी शक्ति" शीर्षक पर झाँकी प्रस्तुत कर रहा है।

महाराष्ट्र संतों और देवताओं की भूमि है। देश के अनेक शक्तिपीठों में से महाराष्ट्र में साढ़े तीन शक्तिपीठ है। कोल्हापुर के अंबाबाई, तुलजापूर के आई भवानी, माहूर के रेणुका माता को पूर्ण शक्ति पीठ एवं वणी के सप्तशृंगी को आधा शक्ति पीठ माना जाता है। इन सभी देवियों को शक्ति का स्रोत माना जाता है। इसे इस झाँकी के माध्यम से दर्शाया गया है।

झाँकी के अग्र भाग में देवी से जुड़ी घोंडाली को संबल वाद्य यंत्र बजाते हुए देखा जा सकता है। संबल देवी से संबंधित एक महत्वपूर्ण वाद्य यंत्र माना जाता है। झाँकी के मुख्य भाग पर साढ़े तीन शक्तिपीठों की प्रतिकृतियां प्रदर्शित की गई हैं। झाँकी के केंद्र में लोक कला रूप पोतराज और आराधी हैं, जो देवी से जुड़े हैं। इस मौके पर महाराष्ट्र की एक अलग पहचान लोक कला को प्रदर्शित किया गया है। झाँकी का आधार मंदिर शैली है, इसलिए मंदिर शैली का चित्रण किया गया है।

पीछे की ओर झाँकी में नारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हुए एक महाराष्ट्रीयन महिला को दर्शाया गया है। इसके अलावा आराधी, भोपी, भुतये, जोगवा, पोतराज आदि लोक कलाओं को भी झाँकी में दिखाया गया है। कुल मिलाकर यह झाँकी महाराष्ट्र की नारी शक्ति के साथ–साथ मंदिर शैली और लोक कला की अमूर्त विरासत को प्रदर्शित करती है।

– महाराष्ट्र

SADE TIN SHAKTIPEETH AND NARI SHAKTI

On the back ground of Azadi ka Amrit Mahotsav, Maharashtra this year, presents the tableau on the theme "Sade Tin Shaktipeeth and Nari Shakti" under the theme Narishakti.

Maharashtra is the land of Saints and Gods. Out of the many Shaktipeeths in the country, Maharashtra has three and a half Shaktipeeths. Ambabai of Kolhapur, Aai Bhawani of Tuljapur, Renuka Mata of Mahur are full Shakti Peethas, while Saptashringi of Vani is considered as half Shakti Peeth. All these Goddesses are considered as sources of power. This is being depicted through this tableau.

In the front part of tableau, the Ghondali associated with the goddess can be seen playing the instrument Sambal. Sambal is considered to be an important music instrument related to Goddess. On the main body of the tableau, replicas of Three and a Half Shaktipeeths have been shown. At the center of the tableau there are folk art form Potraj and Aaradhi, which are associated with the Goddess. Folk art, a distinct identity of Maharashtra, is displayed on this occasion. Since the base of tableau is temple style, temple style has been depicted.

A Maharashtrian woman is depicted on the back side of the tableau, representing Feminine power. Apart from that, folk art forms such as Aaradhi, Bhopi, Bhutye, Jogwa, Potraj are also shown on tableau. Overall this tableau showcases the feminine power as well as the intangible heritage of temple style and folk art of Maharashtra.

- MAHARASHTRA

25

तमिलनाडु की संस्कृति और महिला सशक्तिकरण

झाँकी संगम काल से लेकर वर्तमान तक तमिलनाडु की महिला सशक्तिकरण और संस्कृति को प्रदर्शित करती है। जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की मुक्ति ने राज्य के सामाजिक–आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन में एक प्रमुख भूमिका निभाई है।

आथिचूड़ी और कोंडराइवेंथन लिखने वाली प्रसिद्ध और युगीन कवयित्री अव्वयार को झाँकी के अग्र भाग में प्रदर्शित किया गया है। वह अपनी उच्चस्तरीय नैतिकता के साथ–साथ अपनी सराहनीय कविता के लिए भी प्रशंसित हैं। दोनों ओर शिवगंगा की रानी, वीरमंगई वेलु नाचियार हैं, जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध छेड़ा और बहादुरी के प्रतीक के रूप में खड़ी हुईं।

प्रख्यात महिला व्यक्तित्वों को मध्य भाग में प्रदर्शित किया गया है। शुरूआत से, भारत रत्न श्रीमती एमएस सुब्बुलक्ष्मी, जिन्होंने कर्नाटक संगीत में महत्वपूर्ण योगदान दिया, (ii) प्रसिद्ध भरतनाट्यम कलाकार एवं भरतनाट्यम में क्रांति लाने वाली पद्म भूषण तंजावुर बालासरस्वती, (iii) पद्म भूषण डॉ मुथु लक्ष्मी रेड्डी, भारत की एक समाज सुधारक और अग्रणी महिला चिकित्सक, जिनके नाम पर राज्य की मातृत्व लाभ योजना को सम्मान के रूप में स्थापित किया गया, (iv) एक समाज सुधारक और द्रविड़ियन आंदोलन के उत्साही कार्यकर्ता मूवलूर रामामिरथम अम्मैयार, जिन्होंने देवदासी प्रथा को खत्म करने के लिए संघर्ष किया एवं (v) पद्मश्री श्रीमती पप्पम्मल, एक प्रसिद्ध जैविक किसान, जिनकी 105 साल की उम्र में भी अपने खेत में काम करने के लिए प्रशंसा की जाती है, को प्रदर्शित किया गया है।

पृष्ठ भाग में, महान चोल राजाराज चोलन द्वारा निर्मित "तंजावुर बृहदेश्वर मंदिर", जिसे यूनेस्को ने विश्व विरासत स्थल के रूप में मान्यता दी है, को प्रदर्शित किया गया है। झाँकी के दोनों ओर कलाकारों को करगाट्टम और पारंपरिक संगीत बजाते हुए प्रदर्शित किया गया है।

– तमिलनाडु

WOMEN EMPOWERMENT AND CULTURE OF TAMIL NADU

The tableau displays women empowerment and culture of Tamil Nadu from the Sangam era to the present. The emancipation of women in all walks of life played a major role in the socio-economic development and social transformation of the State.

The renowned and erudite poetess Avvaiyar, who wrote Aathichoodi and Kondraiventhan, is featured in the front of the tableau. She is admired for her exponential morality, as well as for her acclaimed poetry. On either side is the Queen of Sivaganga, Veeramangai Velu Naachiar, who waged war against the British and stood as an epitome of bravery.

In the middle portion, Eminent female personalities are featured. Starts with Bharat Ratna Smt. M.S. Subbulakhsmi, who contributed significantly to the Carnatic music, (ii) Legendary Bharatanatyam performer Padma Bhushan Tanjore Balasaraswati, who revolutionized Bharatanatyam, (iii) Padma Bhushan Dr. Muthulakhmi Reddy, a social reformer and pioneer female doctor of India in whose name maternity benefit scheme of the state was established as an honour, (iv) Moovalur Ramamirtham Ammaiyar, a social reformer, and an ardent activist of the Dravidian Movement, who fought to eradicate the Devadasi system and (v) Padma Shri Smt. Pappammal a well-known organic farmer who is admired for still working in her farm at the age of 105, are featured.

On rear, the UNESCO recognized World Heritage Site "Thanjavur Brihadeeswarar Temple" built by Great Chozha King Rajaraja Chozhan, is showcased. Karagaattam and traditional music is played on both sides of the tableau.

- TAMIL NADU

26

नारी शक्ति का उत्सव

झाँकी का विषय है "नारी शक्ति का उत्सव"। 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के भाग के रूप में, कर्नाटक 'नारी शक्ति' के तहत उपलब्धि हासिल करने वाली तीन महिलाओं की उपलब्धियों को प्रस्तुत करता है।

सूलगित्ति नरसम्मा, एक दाई; तुलसी गौड़ा हालक्कि, जिन्हें 'वृक्षा माते' (पेड़ों की माँ) और सालूमरदा (पेड़ों की कतार) तिम्मक्का के रूप में जाना जाता है, समाज में अपने निस्वार्थ योगदान के कारण प्रसिद्ध नाम बन गई हैं।

झाँकी के अग्रभाग में दाई सूलगित्ति नरसम्मा हैं, जो बच्चे के पालने को हिला रही हैं और अपनी गोद में बच्चे के साथ खेल रही हैं। नरसम्मा कुशल डॉक्टरों के अभाव में पारंपरिक तरीके से प्रसव कराने में माहिर हैं। उनके द्वारा दो हजार से अधिक ऐसे प्रसव कराए जा चुके हैं। झाँकी के केंद्र में पौधों का पोषण करते हुए तुलसी गौड़ा हालक्कि हैं। तुलसी, जिन्हें 'वृक्षा माते' (पेड़ों की माँ) के रूप में भी जाना जाता है, पौधों की दुर्लभ प्रजातियों की पहचान करने और उनकी खेती करने की विशेषज्ञ हैं। इन्हें 30,000 से अधिक पौधे लगाने का श्रेय प्राप्त है। इन्हें पौधों के बीच बैठकर उनकी देखभाल करते दिखाया गया है। झाँकी के अंतिम भाग में, पौधे लगाने वाली सालूमरदा तिम्मक्का को दिखाया गया है, जिन्होंने राजमार्गों के किनारे 8,000 पेड़ लगाए और उन्हें पानी दिया। उन्हें खड़े होकर पौधों को पानी देते हुए दिखाया गया है। इसके अलावा, उन्होंने 4.5 किमी लंबे राजमार्ग के किनारे बरगद के 75 पेड़ लगाए और उनकी परवरिश की। इसे झाँकी के अंत में बरगद के विशाल पेड़ द्वारा दर्शाया गया है।

हालांकि ये कर्नाटक के सबसे पिछड़े गांवों में बहुत ही साधारण परिवार में जन्मीं और पलीं–बढ़ीं, लेकिन उनकी जन्म–जाति–स्थिति कभी भी उनकी उपलब्धियों के आड़े नहीं आई।

– कर्नाटक

CELEBRATING POWER OF NARI

The theme of the tableau is "Celebrating Power of Nari". As part of the 'Azadi Ka Amrita Mahotsava', Karnataka presents the achievements of three women achievers under the name 'Nari Shakti' (Women Power).

Sulagitti Narasamma, a midwife; Tulsi Gowda Halakki, known as 'Vruksha Maate' (Mother of trees) and Salumarada (Row of tree) Thimmakka, a tree planter have become noted names due to their selfless contribution to the society.

In the foreground of the tableau is Sulagitti Narasamma, rocking the cradle and playing with a child in her arms. She is an expert in performing deliveries in a traditional way in the absence of doctors. More than two thousand such deliveries have been performed by her. At the center of the tableau is Tulsi Gowda Halakki, nurturing the plants. Tulsi, known as 'Vruksha Maate' (Mother of trees) is an expert in identifying and cultivating rare species of plants. She has the credit of planting more than 30,000 saplings. This is shown in the form of her sitting amidst the plants and nurturing them. The rear part of the tableau shows Salumarada Thimmakka, who planted 8000 trees along the state highways and watered them. It has been depicted as she is watering the plants. Besides, she planted and raised 75 banyan trees along the 4.5 km long State highway. This is depicted by the huge banyan tree at the end of the tableau.

Although born and brought up in a very ordinary family in the most backward villages of Karnataka, their birth - caste - status never came in the way of their achievements.

- KARNATAKA

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव

हरियाणा की गणतंत्र दिवस–2023 पर झाँकी का शीर्षक 'अंतरर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव' है। झाँकी में मानव जाति के लिए सबसे बड़ी बौद्धिक देन 'गीता' पर आधारित डिजाइन प्रस्तुत किया गया है।

कुरुक्षेत्र श्रीमद्भगवद गीता के शाश्वत संदेश की जन्मभूमि है जो महाभारत युद्ध के पहले दिन भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिया था। गीता के वैश्विक प्रेरणादायक संदेश के प्रसार के लिए इसके जन्मस्थल कुरुक्षेत्र में हर साल अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव आयोजित किया जाता है। यह विश्व के सामने प्रदर्शन हेतु राज्य का सबसे बड़ा गौरव है।

झाँकी में भगवान श्रीकृष्ण को अर्जुन के सारथी के रूप में और गीता का ज्ञान देते हुए दिखाया गया है। झाँकी के अग्रभाग में संवाद शुरू होता है जहाँ भगवान श्रीकृष्ण के 'विराट स्वरूप' जैसा कि उन्होंने अर्जुन को दिखाया था, की जीवंत विशाल प्रतिमा को दर्शाया गया है।

झाँकी के पश्चभाग में संवाद जारी है जहाँ कुरुक्षेत्र युद्ध क्षेत्र में चार घोड़ों के साथ एक भव्य रथ प्रदर्शित किया गया है। रथ, घोड़ों और सभी तत्वों को गहन विवरण के साथ दर्शाया गया है। अर्जुन और श्रीकृष्ण के रथ पर सवार प्रतिमाओं को रंगीन बनाया गया है जबकि पश्च भाग के बाकी हिस्से को एक ही पार्थिव छाया में बनाया गया है। झाँकी का हर एक विवरण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

– हरियाणा

INTERNATIONAL GITA MAHOTSAV

'International Gita Mahotsav' is the theme of the tableau Haryana on Republic Day-2023. A design of the tableau based on Geeta, the greatest intellectual contribution to the mankind has been presented.

Kurukshetra is the land of eternal message of Srimadbhagavad Gita which was delivered by Sri Krishna to Arjuna on the first day of Mahabharata battle. International Gita Mahotsav is celebrated in its birth place Kurukshetra every year to spread the global inspirational message of Gita. It is the greatest pride of the state worthy of showcasing before the world.

In its entirety the tableau shows the Lord Krishna serving as charioteer of Arjuna and giving him the knowledge of Geeta. The front portion of the tableau opens the dialogue where a larger than life statue of Lord Krishna in his 'Virat Swaroop', as he displayed before Arjuna has been shown.

The dialogue continues at the back in the rear protion, where a grand chariot with four horses running through in the battle field Kurukshetra have been displayed. The chariot, horses and all elements are displayed with intricate details. The statues aboard the chariot of Arjuna and Krishna are created in colour whereas rest of the rear portion have been created in a single earthly shade. Every single detail is clearly visible.

- HARYANA

जनजातीय संस्कृति और विरासत का संरक्षण

संघशासित प्रदेश की झाँकी का शीर्षक है "जनजातीय संस्कृति और विरासत का संरक्षण"। क्षेत्र का गठन पूर्व पड़ोसी संघशासित प्रदेश, दादरा, नगर हवेली और दमन दीव के विलय द्वारा किया गया है। इस प्रदेश ने समृद्ध जनजातीय संस्कृति के साथ गौरवशाली विरासत का पोषण किया है।

यद्यपि रीति–रिवाजों और अनुष्ठानों में अंतर है, फिर भी क्षेत्र के लोग सांप्रदायिक सद्भाव के साथ–साथ प्रकृति में सद्भाव बनाए रखते हैं। क्षेत्र की विविध संस्कृति में विश्व प्रसिद्ध जनजातीय लोक नृत्य भी शामिल हैं जैसे स्थानीय संगीत वाद्ययंत्र तारपा के लयबद्ध संगीत के साथ भवाड़ा और मच्छी नृत्य।

झाँकी के अग्रभाग में आईएनएस खुखरी जहाज का लंगर दिखाया गया है, जो 1971 में भारत–पाक युद्ध के दौरान अरब सागर में दीव तट के पास डूब गया था। प्रशासन ने युद्ध के दौरान अपने प्राणों की आहुति देने वाले सभी शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए एक स्मारक पहाड़ी के रूप में विकसित किया गया है जो आगन्तुकों के लिए बलिदानी शौर्य का संदेश भी देता है। पश्चभाग में सागौन की लकड़ी, जो मुख्य रूप से सिलवासा क्षेत्र में पाई जाती है, से बनी नाव जो क्षेत्र की पारंपरिक मछली पकड़ने की आजीविका का प्रतिनिधित्व करती है, को दर्शाया गया है। दीव किले की विरासत जिसमें लाइट हाउस जेट्टी और कैनन आर्टिलरी भी शामिल हैं, जिन्हें भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के समन्वय में प्रशासन द्वारा संरक्षित किया जा रहा है, को भी झाँकी के पश्चभाग में प्रदर्शित किया गया है।

– दादरा और नगर हवेली एवं दमन और दीव

CONSERVATION OF TRIBAL CULTURE AND HERITAGE

The theme of the tableau of Union Territory is "Conservation of Tribal Culture and Heritage". The territory is constituted through merger of former neighboring UTs of Dadra, Nagar Haveli and Daman Diu. The terrain has nurtured glorious heritage with rich tribal culture.

Though there is difference in customs & rituals, people of the territory maintain a communal harmony as well as hormony in nature. The diverse culture of the territory also includes world famous tribal folk dances like Bhavada & Machhi dance with rhythmic music of Tarpa, a local musical instrument.

The tableau front showcases the Anchor from INS Khukri Ship, which was sunk during the Indo Pak war in 1971 near the coast of Diu in Arabian Sea. The Administration has developed a memorial hill to pay tribute to all martyrs who sacrificed their lives during the war, which also sends a message of the sacrificing bravery for the visitors. In the rear portion, the large wooden boat made up of Teak Wood, which is majorly found in Silvassa region, represents the traditional fishing livelihood of territory. Diu Fortress which also includes Light House Jetty and Canon Artillery, depicts the heritage of Diu District as being conserved by the Administration in coordination with Archaeological Survey of India are also shown at the rear portion.

- DADRA & NAGAR HAVELI AND DAMAN & DIU

अयोध्या दीपोत्सवः समृद्ध संस्कृति एवं विरासत का प्रतीक

उत्तर प्रदेश की गणतंत्र दिवस–2023 पर प्रस्तुत झाँकी का शीर्षक है "अयोध्या दीपोत्सवः समृद्ध संस्कृति एवं विरासत का प्रतीक"। उत्तर प्रदेश की अयोध्या नगरी का अद्वितीय दीपोत्सव रामराज्य के समरस एवं सौहार्द पूर्ण समाज का संदेश सम्पूर्ण विश्व एवं समस्त मानव जाति तक पहुंचाने का एक पावन, अलौकिक तथा दिव्य प्रयास है।

प्रस्तुत झाँकी के अग्र भाग में प्रभु श्रीराम के कुलगुरू ऋषि वशिष्ठ और साथ ही दीपों को भी दर्शाया गया है, ये दीप अज्ञान के अंधकार को हटा कर ज्ञान के प्रकाश को फैलाने के प्रतीक हैं। ऋषि वशिष्ठ को भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान की परम्परा के वाहक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। झाँकी के मध्य भाग में प्रभु श्रीराम के आगमन पर स्वागत के लिए मनाये जाने वाले दीपोत्सव के अंतर्गत अयोध्या नगरी को दीपों द्वारा सजाया गया है। इसके साथ ही, मध्य भाग में प्रभु श्रीराम के अनुज श्री भरत सहित अन्य परिजन एवं अयोध्यावासी दर्शाये गए हैं। झाँकी के पृष्ठ भाग में प्रभु श्रीराम, माता सीता एवं लक्ष्मण और उनकी सेना सहित पुष्पक विमान से अयोध्या नगरी वापस लौट रहे हैं। इस अवसर पर सम्पूर्ण अयोध्या में हर्ष और उल्लास का वातावरण है।

झाँकी के बायें और दायें भाग में राम की पैड़ी, सरयू घाट आदि पर अयोध्या में मनाये जाने वाले भव्य दीपोत्सव को प्रदर्शित किया गया है। प्रतिवर्ष अयोध्या दीपोत्सव नये कीर्तिमान रच रहा है। इन प्रयासों का ही परिणाम है कि दीपोत्सव के माध्यम से पर्यटन, आय और रोजगार के नये अवसर उपलब्ध हुए हैं।

– उत्तर प्रदेश

AYODHYA DEEPOTSAVA : A SYMBOL OF RICH CULTURE AND HERITAGE

The theme of the tableau presented by Uttar Pradesh on Republic Day-2023 is "Ayodhya Deepotsava : A Symbol of Rich Culture and Heritage". The grand and unique Deepotsav of Ayodhya is a sincere and pious effort to send the divine message of a harmonious society of Ram Rajya to the whole world and the humanity at large.

In the front portion of the tableau the image of Rishi Vashishtha, the family guru of Lord Ram is shown. Also shown are the lamps, which symbolise dispelling of the darkness of ignorance and spreading of the light of knowledge. Rishi Vashishtha is presented as the flagbearer of Indian culture and tradition of knowledge. In the middle of the tableau, the city of Ayodhya is decked up to celebrate the occasion of Deepotsava to welcome Lord Ram on his arrival. Lord Ram's younger brother Shri Bharat is depicted with other relatives and natives of Ayodhya. In the rear portion of the tableau, Lord Ram himself, along with Mata Sita, brother Laxman and his force is reaching Ayodhya by Pushpak Viman. An atmosphere of joy and celebration prevails in the whole of Ayodhya on this occasion.

On the left and right sides of the tableau, the festival of lights is seen being celebrated on Ram ki Paidi, Saryu Ghat etc. Ayodhya Deepotsav is setting new records every year, while creating new opportunities for tourism, income and employment.

- UTTAR PRADESH

30

अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष 2023– भारत की पहल

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (आईसीएआर), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की झाँकी का विषय है "अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष 2023–भारत की पहल"। मिलेट्स के पोषक और पारिस्थितिकीय लाभों के बारे में जागरूकता बढाने के लिए, भारत सरकार के प्रस्ताव को स्वीकारते हुए संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष घोषित किया गया है।

मिलेट्स मनुष्य को ज्ञात सबसे पुरानी खाद्य फसलों में से एक है। मिलेट ग्रुप ज्वार, बाजरा, रागी, कुटकी, कंगनी, चीना, कोदो उच्च पोषक मूल्य और स्वास्थ्य लाभ वाली, हमारी पारंपरिक फसलें हैं। भारत मिलेट्स के उत्पादन (17 मिलियन टन) में विश्व में अग्रणी है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने किसानों के हित के लिए मिलेट्स की बायोफोर्टिफाइड किस्मों की उत्पादन प्रणाली और पोषक उत्पाद विकसित किए हैं।

आईसीएआर की झाँकी के अग्रभाग में ट्रैक्टर पर मिलेट्स की रंगोली को 'पोषक तत्वों का पावर हाउस' जो कि पारंपरिक और आधुनिक कृषि का एक संयोजन है, के रूप में दर्शाया गया है। झाँकी के मध्य भाग में ज्वार, बाजरा, रागी, कुटकी, सांवा, कोदो की लहलहाती फसलें दर्शाई गई हैं। समाज को पौष्टिक और स्वस्थ मिलेट्स उपलब्ध कराने में किसानों की खुशी और प्रयास दिखाई दे रहा है। महिला किसान मिलेट्स की अच्छी फसल को ले जाते हुए दिख रही हैं। यह हमें अपनी खाने की थाली में रोजाना इसे परोसने के लिए प्रेरित करता है। भारत के नेतृत्व और मार्गदर्शन में पूरा विश्व अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष–2023 मना रहा है। यह दुनिया भर में भारतीय मिलेट्स को लोकप्रिय बनाने का एक अवसर है। झाँकी के पिछले हिस्से में नए मूल्य वर्धित मिलेट्स उत्पादों को प्रदर्शित किया गया है ताकि किसानों को उच्च लाभ के लिए वैश्विक पहुंच प्राप्त करने में सहायता मिल सके।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद,
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

INTERNATIONAL YEAR OF MILLETS-2023-INDIA'S INITIATIVE

The theme of the tableau of Indian Council of Agricultural Research (ICAR), Ministry of Agriculture and Farmers Welfare is "International Year of Millets-2023-India's Initiative". To raise awareness about nutritional and ecological benefits of millets, the proposal of Government of India has been accepted by United Nations to declare 2023 as the International Year of Millets.

Millets are one of the oldest food crops known to humans. The millet group Jowar, Bajra, Ragi, Kutki, Kangni, Cheena, Kodo are our traditional crops with high nutritional value and health benefits. India is a global leader in the production (17 million ton) of millets. ICAR has developed biofortified varieties production system and nutritions products of millets for the benefit of farmers.

The tableau of ICAR in front protion depicts rangoli of millets on tractor symbolize as 'Power House of Nutrients', a combination of traditional and modern agriculture. In the middle part of tableau, the flourishing crops of Jowar, Bajra, Ragi, Kutki, Sanwa, Kodo have been shown. The happiness and efforts of farmers are visible to provide nutritious and healthy millets. Women farmers are carrying good harvest of millets. It motivates us to serve daily in our food plate. The whole world is celebrating International Year of Millets-2023 under the guidance of India. This is an opportunity to popularize Indian millets across the globe. The new value-added millet products have been showcased in the rear portion of the tableau to support farmers get a global reach for high profits.

INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH,
MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE

31

एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय

जनजातीय कार्य मंत्रालय की गणतंत्र दिवस–2023 की झाँकी का शीर्षक "एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय (ईएमआरएस)" योजना पर आधारित है। एकलव्य विद्यालय प्रकृति की गोद में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं जिस प्रकार प्राचीन भारत में गुरुकुल में शिक्षा प्रदान की जाती थी।

ईएमआरएस योजना के अंतर्गत दूरस्थ क्षेत्रों के जनजातीय विद्यार्थियों को आवासीय परिसर में कक्षा छठी से बारहवीं तक गुणवत्तापूर्ण निःशुल्क शिक्षा प्राप्त होती है। एकलव्य विद्यालय, विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा प्रदान करने के साथ–साथ उनकी सांस्कृतिक विरासत को भी संरक्षित करते हैं ।

झाँकी के अग्रभाग में ग्लोब एवं कलम के साथ प्रदर्शित एक छात्रा, ज्ञान के माध्यम से विश्वविजेता बनने की आकांक्षा का प्रतीक है। झाँकी के मध्य में दर्शाई गयी एकलव्य के धनुष में बाणरूपी कलम के साथ खुली किताब, जनजातीय विद्यार्थियों के सपनों को साकार करने के एकाग्रचित मिशन को दर्शाती है। प्राचीनकाल में, जनजातीय समुदाय धनुष–बाण का उपयोग आत्मरक्षा एवं सशक्तिकरण के लिए करते थे। वर्तमान में यह कलम शिक्षा का प्रतीक है, जो आधुनिक युग में जनजातीय लोगों के सशक्तिकरण का साधन बन रहा है। धनुष–बाण, एकलव्य विद्यालयों में जनजातीय छात्रों की पारंपरिक खेल प्रतिभाओं के पोषण का भी प्रतीक है। झाँकी के पृष्ठ भाग में प्रक्षेपित ज्ञान वृक्ष, शिक्षकों द्वारा दूरस्थ जनजातीय इलाकों से आए विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ जनजातीय संस्कृति के संरक्षण की भावना को भी दर्शाता है, जो एकलव्य विद्यालयों का एक प्रमुख उद्देश्य है।

– जनजातीय कार्य मंत्रालय

EKLAVYA MODEL RESIDENTIAL SCHOOL

The tableau of Ministry of Tribal Affairs on Republic Day-2023 is based on the theme of "Eklavya Model Residential School (EMRS)" scheme. Eklavya schools are testimony of the fact that quality education should be imparted in the lap of nature like it used to be in Gurukuls of ancient India.

Under EMRS scheme, tribal students residing in remote tribal areas are provided with free quality education from class 6th to 12th in a residential set up. Eklavya Schools are centers for providing modern education while keeping students rooted to their culture and heritage.

In the front portion of the tableau, a girl shown with a pen holding a globe in her hands is symbolic of her will to conquer the world with the power of knowledge. An open book depicted in the center of the tableau with an archetypical pen in the shape of Eklavya's bow and arrow reflects single-eyed mission with which students chase their dreams at EMRSs. In the past, bow and arrow were used to protect and empower tribal people, now education is the tool to empower them which has been symbolized through projection of pen. Bow and arrow also symbolize nurturing of traditional sporting talents of tribal students. A knowledge tree projected in the rear portion of the tableau represent spread of knowledge and wisdom from Eklavya school teachers to their students. It also reflects the spirit of conserving tribal culture, a prime objective of Eklavya schools.

- MINISTRY OF TRIBAL AFFAIRS

32

संकल्प @75–नशा मुक्त भारत

नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो, (एनसीबी), गृह मंत्रालय की झाँकी "RESOLVE @75-DRUG FREE INDIA" थीम के साथ भारत को 'नशा मुक्त' बनाने के संकल्प को दर्शाती है।

आदिकाल से भारत सदैव 'वसुधैव कुटुम्बकम' के व्यापक ध्येय के साथ सम्पूर्ण विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता रहा है। यह झाँकी, ड्रग्स के खिलाफ, भारतवर्ष के सशक्त संकल्प को प्रदर्शित करती है, भारतवर्ष में जन आंदोलन के माध्यम से 'नशा मुक्त भारत' के लक्ष्य को साधित करने के लिए एन.सी.बी. की कर्तव्य परायणता को प्रदर्शित करती है।

झाँकी के अग्र भाग में एक वृहत मानव सदृश प्रतिमा को दर्शाया गया है जो कैक्टस के बगीचे संरूप कंटकमय नशे के दुष्परिणामों को दमन करता हुआ एवं अपने हाथों को क्रॉस किए हुए व सिर को दाईं ओर लहराते हुए ड्रग्स के खिलाफ एक मजबूत संकेत दे रहा है। पिछले हिस्से में पर्वतमय भूभाग से उभरती हुई भारत के विभिन्न जाति, धर्म, वर्ग, लिंग का प्रतिनिधित्व करती हुई वृहताकार हाथ अपने संयुक्त श्रम एवं उद्देश्य से 'नशा मुक्त भारत' के सपने को जन–जन तक विस्तार हेतु प्रयासरत है। झाँकी के दोनों तरफ, भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को ड्रग्स के खिलाफ संकल्प लेते हुए दर्शाया गया है।

झाँकी के साइड पैनल में दो हाथों का मिलाप नशे के विरुद्ध सभी हितधारकों की सहभागिता, समर्पण और एकजुटता को दर्शाता है। झाँकी के समीप, राष्ट्र को नशामुक्त करने के उद्देश्य प्रति समर्पित, एनसीबी के कार्मिक नारK9 (राष्ट्रीय नारकोटिक्स श्वान पूल) दस्ते के साथ कदम से कदम मिलाकर सतत एवं सजग रूप से आगे बढ़ रहें हैं।

– नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो,
गृह मंत्रालय

RESOLVE @75 - DRUG FREE INDIA

Tableau of Narcotics Control Bureau (NCB), Ministry of Home Affairs with theme "RESOLVE @75-DRUG FREE INDIA", reflects the resolve to make India drug free.

Since time immemorial, India has always been paving the way for the welfare of the whole world with the broad goal of 'Vasudhaiva Kutumbakam'. This tableau shows the strong resolution of India against drugs, to achieve the goal of ' Drug Free India' through the mass movement and demonstrates NCB's devotion to duty.

The front part of the tableau depicts a large humanoid sculpture suppressing the ill effects of drugs -depicted in the form of a cactus garden, with crossed arms and head swaying to the right, giving a strong message against drugs. In the rear part, large-sized hands, representing citizens of India irrespective of caste, religion, class and gender, emerging from a hilly terrain spreading the vision of "Nasha Mukt Bharat" among the masses with their joint effort and purpose. In both sides, people belonging to different parts of India are shown to be taking pledge against drugs.

At side panel of the tableau, two hands are shown joining in the form of high contour, which represent the participation, dedication and solidarity of all stakeholders against drugs. Beside the tableau, committed to its objective of making the nation drug free, the personnel of NCB are moving step by step along with NARK9 (National Narcotics Canine Pool) Squad relentlessly and purposefully.

- NARCOTICS CONTROL BUREAU,
MINISTRY HOME AFFAIRS

केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल में नारी शक्ति

गृह मंत्रालय के अंतर्गत "केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल में नारी शक्ति" विषय–वस्तु (थीम) पर सभी केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल की समेकित झाँकी महिला योद्धाओं द्वारा निभाई गई विविध भूमिका को दुनिया के सामने प्रदर्शित करने का प्रयास है।

यह विभिन्न भौगोलिक और जनसांख्यिकीय चुनौतियों के अधीन विविध परिचालनिक परिदृश्यों में उनकी अहम भूमिका और खेल–कूद एवं सिविक एक्शन कार्यक्रमों जैसी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी को दर्शाती है। 'नारी शक्ति' की भावना को बुलंद रखने वाली इन महिला जांबाजो का संकल्प न केवल वर्दीधारी सेवाओं के लिए बल्कि पूरे देश के लिए एक प्रेरणा है।

झाँकी के सामने के भाग में एक बख्तरबंद वाहन में सतर्क मुद्रा में खड़ी एक महिला योद्धा की विशाल जीवंत प्रतिमा दर्शाई गई है, जो आधुनिक उपकरणों और प्रौद्योगिकी के अनुकूल होने के लिए सभी केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल की बहादुर महिला सैनिकों की तत्परता को दर्शा रही है।

झाँकी के पिछले हिस्से में महिला योद्धाओं द्वारा निर्वहित किए जाने वाले विभिन्न कर्तव्यों में उनकी भागीदारी और राष्ट्र की सेवा करते हुए उनकी दृढ़ कर्तव्यनिष्ठा और वीरता को दर्शाया गया है। यह उन सभी वीर महिला सैनिकों को सच्ची श्रद्धांजलि है जो न केवल एक प्रतिबद्ध योद्धा के रूप में देश की सेवा कर रही हैं बल्कि खेल के क्षेत्र में भी देश का नाम रोशन कर रही हैं। इन महिला योद्धाओं ने देश की सेवा करने के लिए व्यावसायिक उत्कृष्टता और प्रतिबद्धता हासिल करके इस क्षेत्र में अपनी योग्यता सिद्ध की है।

– केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल,
गृह मंत्रालय

NARI SHAKTI IN CAPFs

The consolidated tableau of all CAPFs under the Ministry of Home Affairs on the theme of 'Nari Shakti in CAPFs' endeavors to present to the world, the different roles played by women warriors.

It depicts their role in diverse operational scenarios subjected to varied geographical and demographical challenges and their active participation in activities like Sports and Civic Action Programs. The resolve of these women soldiers who hold the spirit of 'Nari Shakti' high, is an inspiration to not only uniformed services but for the entire Nation.

The front part of the tableau depicts a larger-than-life statue of a woman combatant standing in an armoured vehicle in alert position depicting the readiness of women warriors of all CAPFs to adapt to modern equipment and technology.

The rear portion of the tableau showcases the participation of women combatants in different set of duties performed by them and their steadfast devotion and valour while serving the nation. This is a tribute to all gallant women soldiers who are not only serving the nation as a committed warrior, but have also brought laurels to the nation in the field of sports. These women warriors have proved their mettle in this field by achieving professional excellence and commitment to serve the nation

- CENTRAL ARMED POLICE FORCES,
MINISTRY OF HOME AFFAIRS

जैव–विविधता संरक्षण

केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग की झाँकी मूल विषय 'जैव–विविधता का संरक्षण' को प्रस्तुत कर रही है जो कुछ और नहीं अपितु दीर्घकालिक विकास के लिए संसाधन प्राप्त करने हेतु जैव–विविधता की रक्षा और प्रबंधन ही है।

जैव–विविधता संरक्षण प्रजातियों की विविधता, प्रजातियों की दीर्घकालिक उपयोगिता एवं पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करने के उद्देश्यों पर केन्द्रित है। जैव–विविधता प्रकृति में विद्यमान हर चीज को संबल प्रदान करती है जो हमारे जीवित रहने के लिए आवश्यक है जैसे–भोजन, स्वच्छ पानी, दवा और आश्रय। जैव–विविधता के बारे में एक सबसे अच्छी चीज इसका लचीलापन है।

झाँकी का अग्र भाग भारत में वर्ष 1952 के दौरान विलुप्त हुए इस जानवर की आबादी पुनर्जीवित करने की परियोजना के भाग के रूप में चीते को दर्शा रहा है। हाल ही में आठ चीते नामीबिया से "चीते की वापसी" संबंधी कार्यक्रम के अंतर्गत लाए गए हैं।

झाँकी के पृष्ठ भाग में पारिस्थितिकी तंत्र से विलुप्त होने/विलुप्तप्राय होने के डर से जीवित जीवों जैसे राइल द्वीप का कछुआ, मधुमक्खियां, तितलियां, काली क्रेन, लाल गिलहरी, हार्न बिल और सोनपंखी भृंग को प्रदर्शित किया गया है। झाँकी के पिछले हिस्से के शीर्ष में केटरपिलर को प्रदर्शित किया गया है जो लेपिडोप्टर के जीवन चक्र का दूसरा चरण है।

झाँकी के अंतिम भाग में राष्ट्रीय पक्षी मोर को नाचते हुए दर्शाया गया है जो पारिस्थितिकी तंत्र संतुलन की आवश्यकताओं को विनियमित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संरक्षण उपायों की उचित विवक्षा समय की माँग है। संपूर्ण झाँकी आकर्षक अनुभव प्रदान करने के लिए जीवंत रंगीन प्राकृतिक फूलों से बनाई गई है।

–केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग

BIODIVERSITY CONSERVATION

The CPWD tableau is presenting the theme 'Biodiversity Conservation' which is nothing but the protection and management of biodiversity to obtain resources for sustainable development.

Biodiversity conservation has been focused with the objectives of preserving the diversity of species, sustainable utilization of species and ecosystem. Biodiversity supports everything in nature that we need to survive: food, clean water, medicine and shelter. One of the most beautiful things about biodiversity is its resilience.

The front of the tableau is showcasing the Cheetah as part of project to revive the population of the animal which became extinct in India during 1952. Recently eight no. of Cheetahs have been brought from Namibia under Cheetah reintroduction program.

The rear of the tableau have been depicted with the living organisms under threat of extinction /endangered from the ecosystem viz. ryle island tortoise, honeybees , butterflies, whooping crane, red squirrel, horn bill and ladybird beetle. The back end top of the trailer is depicted with a caterpillar which is second stage of the life cycle of the Lepidopterans.

The rear end of the tableau is depicted with national bird, dancing peacock which plays an important role in regulating the ecosystem balance needs. The proper implication of conservation measures is the need of hour. The entire tableau is crafted with vibrant coloured natural flowers to establish eye pleasing experience.

-CENTRAL PUBLIC WORKS DEPARTMENT

शक्ति रूपेण संस्थिता

संस्कृति मंत्रालय गणतंत्र दिवस–2023 पर अपनी झाँकी "शक्ति रुपेण संस्थिता" शीर्षक पर प्रस्तुत करता है। यह झाँकी 'शक्ति' अथवा या 'महिला–शक्ति' की विषयवस्तु पर आधरित है, जो कण कण में व्याप्त है और उन्हें ऊर्जावान बनाती है।

इस झाँकी में शक्ति अथवा बल के रूप में, बुद्धि अथवा विचार शक्ति के रूप में एवं लक्ष्मी अथवा समृद्धि के रूप में नारी को दर्शाया है, भारतीय परम्परा के अनुसार मातृ शक्ति (देवी माँ) के ये रूप समस्त ब्रह्मांड की सृष्टि, संहार एवं पुनर्सृष्टि के कारण हैं। साथ ही भारत में, समस्त पृथ्वी एवं जन्मभूमि को भी माता के रूप में देखा जाता है। मातृ–शक्ति के इन्हीं चार कार्यकलापों का प्रतिबिम्बन, देश भर से आए कलावन्तों एवं सुदर्शन मुखौटों की सहायता से इस झाँकी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

झाँकी के प्रारम्भ में सिंहवाहिनी माँ दुर्गा का एक भव्य प्रतिरूप है, जो अज्ञान का विनाश करती हैं, जैसा कि महिषासुर वृतांत के माध्यम से दर्शाया गया है। पृष्ठ–भाग में, देवी माँ के तीन रूप दर्शाए गए हैं साथ ही रंग–बिरंगे पारम्परिक परिधानों में सुसज्जित छऊ, छम, चारकुला, चांगसांग, कच्ची घोड़ी, गौड़ मारिया, थेरकुट्टु, थेय्यम एवं नन्दी ध्वज आदि परम्परागत नृत्य–रूपों को मोहकता से दिखाते हुए कलाकार हैं। ये सब मिलकर एक सुमधुर पार्श्व संगीत के माध्यम से दिव्य मातृ शक्ति का यशोगान कर रहे हैं।

इस झाँकी के माध्यम से कर्त्तव्य पथ पर दिव्यता के अवतरण का एक भव्य उत्सव मनाया जा रहा है।

– संस्कृति मंत्रालय

SHAKTI RUPENA SAMSTHITA

Ministry of Culture presents its tableau on Republic Day-2023 on the theme "Shakti Rupena Samsthita". The tableau is based on the theme 'Shakti' or 'Woman-Power' and celebrates the divine feminine, who resides in and empowers all living beings.

The tableau has manifestations of Her as Shakti or power, as Buddhi or intellect and as Lakshmi or prosperity; as these forms of Matri (divine mother), create, maintain, destroy and re-create the entire Universe, as per Indian tradition. Here, the Earth and the motherland are also revered as the Matri-Shakti. The tableau is a representation of these aforesaid four activities of Hers, with the help of live artistes from all across the country, duly complemented with rich tradition of masks from different parts of India, in all their visible splendour.

The spectacle begins with an iconic Ma Durga atop a lion in all her majesty. She annihilates ignorance as shown through the Mahishasura episode. The rear portion features images of Her three manifestations as they oversee the multifarious dancers; as they exhibit traditional ritualistic dance-forms such as Chhau, Cham, Charkula, Chang- Sang, Kacchi ghodi, Gaur Maria, Therakuttu, Theyyam, and Nandi Dhvaja. Together, all these elements celebrate the divine feminine, with a complementing background music.

The tableau represents a gala, carnivalesque of descent of divinity on the Kartavya Path.

- MINISTRY OF CULTURE

वन्दे भारतम्–नृत्य उत्सव–2023
नारी शक्ति

रक्षा मंत्रालय और संस्कृति मंत्रालय ने भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्षों का स्मरणोत्सव मनाने के लिए आजादी का अमृत महोत्सव के भाग के रूप में 2021 में अखिल भारतीय नृत्य प्रतियोगिता और सांस्कृतिक कार्यक्रम–'वन्दे भारतम्–नृत्य उत्सव' की शुरुआत करने की घोषणा की थी जिसे व्यापक स्तर पर सराहना मिली।

लगातार दूसरे वर्ष, संस्कृति मंत्रालय द्वारा सांस्कृतिक भव्य आयोजन 'वन्दे भारतम्' प्रस्तुत किया जा रहा है, इस वर्ष का विषय है 'नारी शक्ति।' द्वितीय 'वन्दे भारतम्' नृत्य उत्सव के लिए लोक/जनजातीय, शास्त्रीय और समकालीन/फ्यूजन श्रेणियों में 17 से 30 वर्ष के आयु वर्ग के प्रतिभागियों से एकल और समूह श्रेणियों में 15 अक्तूबर से 10 नवम्बर, 2022 के बीच प्रविष्टियां आमंत्रित की गई थीं। यह प्रतियोगिता 3 चरणों में आयोजित की गई थी, बारह स्थानों पर राज्य–संघ राज्य क्षेत्र स्तरीय प्रतियोगिता तथा क्षेत्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं का आयोजन संस्कृति मंत्रालय के सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों द्वारा 17 नवम्बर से 10 दिसम्बर, 2022 तक किया गया। राष्ट्रीय स्तर के समापन समारोह में भाग लेने के लिए 980 नर्तकों को चुना गया। समापन कार्यक्रम 19–20 दिसम्बर, 2022 को जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। सभी स्तरों पर निर्णायक मंडल में प्रख्यात पद्म पुरस्कार और राज्य एवं राष्ट्रीय अकादमी पुरस्कारों से सम्मानित व्यक्ति शामिल थे।

जम्मू और कश्मीर, करगिल और लद्दाख की आर्यन घाटी, दमन और दीव से पहली बार भाग लेने वाले प्रतिभागियों सहित 22 राज्यों और दो संघ राज्य क्षेत्रों से आए 479 कलाकारों तथा पूर्वोत्तर एवं जनजातीय समुदायों के बड़े प्रतिनिधि समूह जो राज्य, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर से होते हुए, पांच तत्वों– पृथ्वी, जल, वायु, आकाश और अग्नि के माध्यम से महिलाओं की शक्ति को प्रदर्शित करने के लिए विशेष रूप से नृत्य निर्देशित कार्यक्रम को गणतंत्र दिवस 2023 में प्रस्तुत करने के लिए उपस्थित हुए हैं।

उक्त विषय के लिए उपयुक्त इस दल में 326 नर्तकियां शामिल हैं जिनके साथ 153 नर्तक भी समन्वय कर रहे हैं।

संगीत की रचना दो युवा महिला संगीतकारों, राजा भवतारिणी और आलोकानंदा दासगुप्ता द्वारा की गई है जिसमें शमित त्यागी ने अतिरिक्त व्यवस्थाएं की हैं जिन्होंने महिलाओं की अंतर्निहित शक्ति को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए कर्नाटक, हिन्दुस्तानी और समकालीन जैज संगीत का समागम किया है। पांच तत्वों की प्रस्तुति गजाला अमीन द्वारा की गई है, पद्मश्री अशोक चक्रधर द्वारा इसे लेखबद्ध किया गया है, जबकि 'नारी शक्ति हैं' के बोल राजेश्वरी दासगुप्ता के हैं।

VANDE BHARATAM-NRITYA UTSAV-2023
NAARI SHAKTI

The Ministry of Defence and the Ministry of Culture had announced in 2021 the launch of 'Vande Bharatam-Nritya Utsav' an All-India dance competition & cultural show as part of the Azadi Ka Amrit Mahotsav to commemorate 75 years of independence of India which received wide appreciation.

For the second year, Ministry of Culture presents its Cultural Extravaganza 'Vande Bharatam', the theme for this year being 'Naari Shakti'. Entries for the 2nd 'Vande Bharatam Nritya Utsav' were sought between 15th Oct. to 10th November 2022 from the participants in the age group of 17-30 years in the genres of Folk/Tribal, Classical and Contemporary/Fusion as solo and group categories. The competition was held in 3 stages with State-UT level competitions at twelve venues while Zonal level competitions at seven places were conducted from 17th November to 10th December 2022 by the Seven Zonal Cultural Centres of the Ministry of Culture. 980 dancers were selected for taking part at the National Level Finale which was held at Jawahar Lal Nehru Stadium New Delhi on 19th - 20th December, 2022. The jury panel at all levels comprised of eminent Padma and State & National Akademi Awardees.

479 artists hailing from 22 States and 2 UTs including for the first time participants from Jammu & Kashmir, Kargil and Aryan Valley of Ladakh, Daman & Diu and a large representation from North East and Tribal communities having won their way through State, Zonal & National Level showcase during the Republic Day 2023 a special choreographed show depicting the power of women through five elements- Earth, Water, Air, Space and Fire.

The contingent befitting the theme comprises of 326 female dancers ably supported by 153 male dancers.

The music has been composed by two young female composers Raja Bhavatharini and Alokananda Dasgupta with additional arrangements by Shamit Tyagi who have combined Carnatic, Hindustani and Contemporary Jazz elements to pay homage to a woman's intrinsic power. The five elements are introduced by Ghazala Amin, penned by Padmshri Ashok Chakradhar while the lyrics for 'Naari Shakti hain' are by Rajeshwari Dasgupta.

इस कार्यक्रम को चार ऊर्जस्वी नर्तकियों की टीम द्वारा नृत्य निर्देशित किया गया है जिनके नाम हैं: जयाप्रभा मेनन, कविता द्विवेदी, निबेदिता मोहापात्रा और भाविनी मिस्रा।

The show has been choreographed by a team of four dynamic female dance exponents namely; Jayaprabha Menon, Kavita Dwibedi, Nibedita Mohapatra and Bhavini Misra.

गायकों और संगीतकारों की सूची

स्वर	संगीतकार		
शालिनी सिंह	वीणा	:	पुण्य श्रीनिवास
के. वासुदेवन	वायलिन	:	एम्बर कन्नन
शरत संतोष	बांसुरी	:	विजय
दीपक	नादस्वरम	:	शिव कुमार
श्रीश	गिटार	:	ब्रूस ली
	मृदंगम	:	चारु
	वुडविंड्स	:	आईडी राव
	सेलो	:	रामचन्द्रन
	सरोद	:	प्रतीक श्रीवास्तव
	ताल और लय	:	नागी, सिद्धार्थ, संजय चन्द्रशेखर
	अतिरिक्त व्यवस्था	:	मुकुन्द अम्बरीश
	संगीत सहायक	:	पुण्य श्रीनिवास और शालिनी सिंह
	संगीत इंजीनियर	:	आमिर खान
	सॉन्ग मिक्सिंग एंड मास्टरिंग	:	विजय दयाल

Singers and Musicians Credit list

Vocals	Musicians		
Shalini Singh	Veena	:	Punya Srinivas
K.Vasudevan	Violin	:	Embar Kannan
Sharath Santhosh	Flute	:	Vijay
Deepak	Nadaswaram	:	Siva Kumar
Sreesh	Guitars	:	Bruce Lee
	Mirudangam	:	Charu
	Woodwinds	:	ID Rao
	Cello	:	Ramachandran.
	Sarod	:	Pratik Srivastava
	Rythm and Percussions	:	Nagi, Siddharth, Sanjay Chandrasekhar
	Additional Arrangement	:	Mukund Ambarish
	Music Assistant	:	Punya Srinivas & Shalini Singh
	Music Engineer	:	Amir Khan
	Song Mixing & Mastering	:	Vijay Dayal

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार, 2023
PRADHAN MANTRI RASHTRIYA BAL PURASKAR, 2023

क्र.सं. S.No.	नाम Name	राज्य State
	वीरता Bravery	
1.	मास्टर रोहन रामचंद्र बहिर Master Rohan Ramchandra Bahir	महाराष्ट्र Maharashtra

कला एवं संस्कृति
Art & Culture

2.	मास्टर आदित्य सुरेष Master Adithya Suresh	केरल Kerala
3.	कुमारी एम. गौरवी रेड्डी Kumari M. Gauravi Reddy	तेलंगाना Telangana
4.	मास्टर संभब मिश्रा Master Sambhab Mishra	ओडिशा Odisha
5.	कुमारी श्रेया भट्टाचार्य Kumari Shreya Bhattacharjee	असम Assam

खेल–कूद
Sports

6.	कुमारी कोलगटला अलन मीनाक्षि Kumari Kolagatla Alana Meenakshi	असम Assam
7.	कुमारी हनाया निसार Kumari Hanaya Nisar	जम्मू और कश्मीर Jammu and Kashmir
8.	मास्टर शौर्यजीत रणजीतकुमार खैरे Master Shauryajit Ranjitkumar Khaire	गुजरात Gujarat

नवाचार
Innovation

9.	मास्टर आदित्य प्रताप सिंह चौहान Master Aditya Pratap Singh Chauhan	छत्तीसगढ़ Chhattisgarh
10.	मास्टर ऋषि शिव प्रसन्न Master Rishi Shiv Prasanna	कर्नाटक Karnataka

समाज सेवा
Social Service

11.	कुमारी अनुष्का जौली Kumari Anoushka Jolly	दिल्ली Delhi

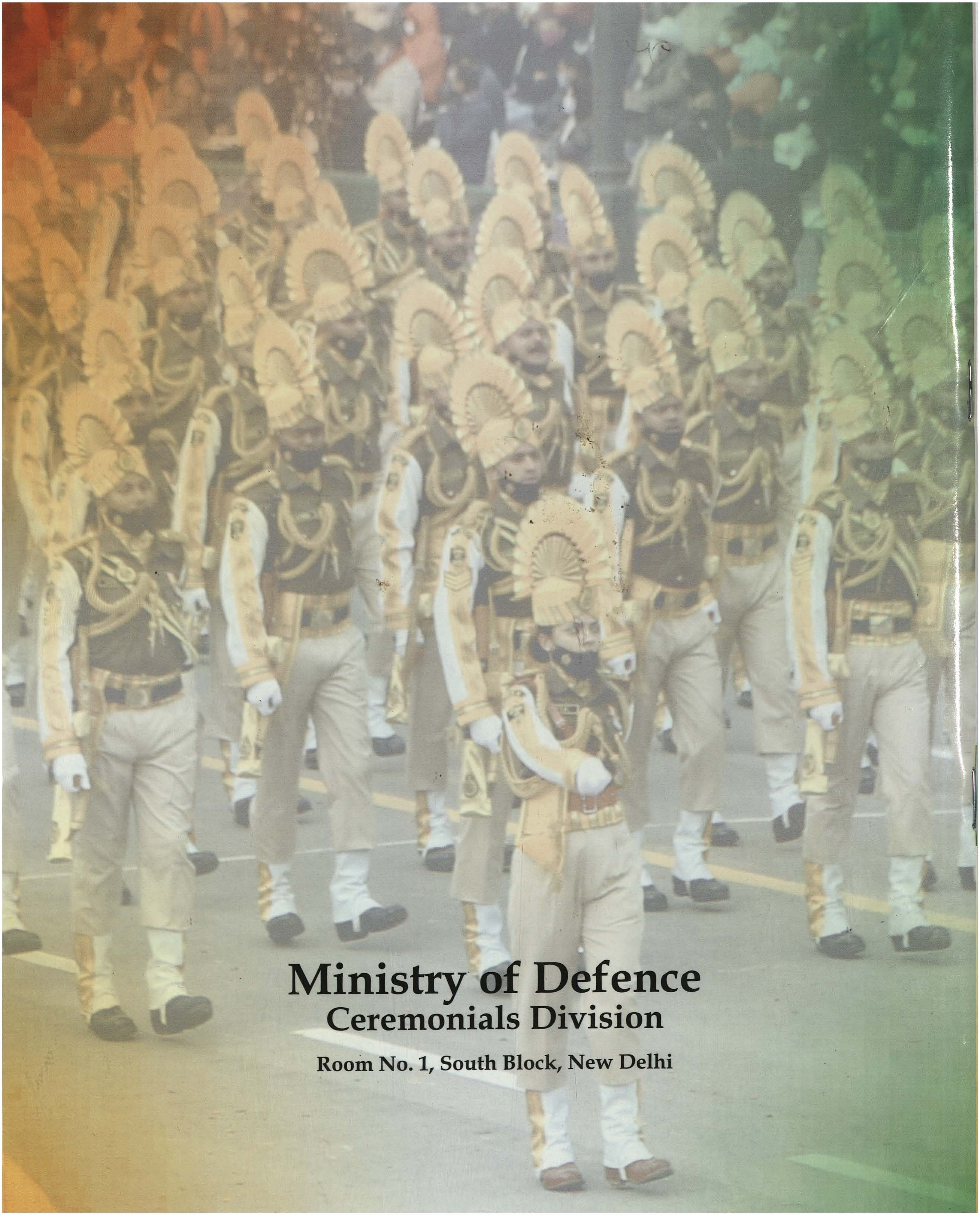

Ministry of Defence
Ceremonials Division

Room No. 1, South Block, New Delhi